भारत एवं राजस्थान सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 7 | अंक 21 | उदयपुर मंगलवार 15 नवम्बर 2022 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

पत्रों के आलोक में (1)

इस स्तंभ में पत्र-साहित्य-विधा में आप पढ़ेंगे - डॉ. महेन्द्र भानावत को समय-समय पर विभिन्न विद्वानों द्वारा लिखे चुनिन्दा साहित्यिक पत्रों का महत्त्वपूर्ण अवदान।

प्रो. भूपतिराम साकरिया, वल्लभ विद्यानगर के पत्र

प्रो. भूपतिराम साकरिया के लिखे मेरे पास दो दर्जन पत्र हैं। इनमें से सर्वाधिक तो पोस्टकार्ड ही हैं। ये पत्र सन् 1976 से लेकर 2016 के बीच लिखे हैं। पत्रों में प्राय: विविध प्रकार की जानकारी चाही है जो मैंने भेजी और नहीं भी भेजी है। कुछ में उन्होंने मेरे द्वारा लिखी पुस्तकें भेजने को लिखा। कुछ तो मैंने भेजी हैं। जो पुस्तकें भेजीं उनमें से एक-दो पर अपनी टिप्पणी लिखी। कुछ को पढ़ने के बाद कुछ लिखने को कहा, पर कुछ भी लिखा नहीं मिला। ऐसा प्राय: हर साहित्यकार के साथ होता रहा है।

जब मैं पहलीबार वल्लभ विद्यानगर गया तो मुझे साकरियाजी ने अपने निवास पर अपने पिताश्री बदरीप्रसादजी से भेंट कराई जो तब राजस्थानी-हिन्दी शब्दकोष का सम्पादन कर रहे थे। बाद में कुछ सामग्री मुझसे भी मंगवाई। उस समय सरदार वल्लभभाई पटेल विश्वविद्यालय में हिन्दी के प्रो. ओमानन्द सारस्वत थे। उसके बाद मैं चार-बार वहां गया।

प्रो. भूपतिरामजी ने एक संक्षिप्त राजस्थानी साहित्यिक व सांस्कृतिक कोश भी तैयार किया। उसके मुद्रित होने की खबर देते मुझे 04 अप्रेल 2004 के पोस्टकार्ड में इसमें संकलित दो हजार प्रविष्ठियों में मेरे लिये जो परिचय दिया वह भी लिख भेजा। दीवाली पर वे अपनी राजस्थानी शुभ-मंगल भाषी काव्यपंक्तियां लिखकर भी भेजते रहे। प्राय: हर पत्र में परिवार के सदस्यों के सम्बन्ध में जानकारी लेते कुशल-मंगल पूछते।

सन् 2016 में जब मेरे आत्मज डॉ. तुक्तक ने पाक्षिक शब्द रंजन प्रारम्भ किया तो साकरियाजी उसमें यदाकदा राजस्थानी दोहे भेजते जो प्रकाशित हुए। धीरे-धीरे उनकी श्रवण शक्ति और नेत्र ज्योति कम होने से अब कभीकभाक ही उनसे फोन पर बातचीत हो पाती है। अब तो उनकी उम्र भी 97 वर्ष की है।

मैंने जब साकरियाजी को 'निर्भय मीरां' पुस्तक भेजी तब उन्होंने मुझे एक अन्तर्देशीय पत्र लिखा। इस पत्र में तारीख नहीं लिखी है पर उसकी जगह 284 सा तथा इसके नीचे 94-8-27 लिखा है। पत्र के कुछ अंश इस प्रकार हैं-

भाई डॉ. महेन्द्र भानावत

राम-राम

कल की डाक से आप द्वारा प्रेषित 'निर्भय मीरां' पुस्तक प्राप्त हुई। इसके लिए शत-शत धन्यवाद। पुराकाल से चलती आई मान्यताओं में विश्वास करने वाले हिन्दू समाज के लिए यह पुस्तक कठोर आघात समा है। यही क्यों, मीरां पर कार्य कर चुके सारे शोधार्थियों के लिए भी एक धक्का है। डॉ. कल्याणसिंह शेखावत, श्री जगदीशचन्द्र गहलोत, डॉ. प्रभात (बम्बई), डॉ. शशिप्रभा, श्री हरिनारायण पुरोहित, श्री परशुराम चतुर्वेदी आदि सारे लेखकों / सम्पादकों के लिए भी एक करारा धक्का है। वैसे शोध के क्षेत्र में यह अनिवार्यता है। मीरां ने कोई पद नहीं लिखे, ऐसी (आपकी लिखी)सूचना जो किसी समाचारपत्र में प्रकाशित हुई थी, उसकी एक कतरन मुझे कविवर भाई श्री श्रीमंतकुमारजी व्यास ने जालोर से तीन दिन पूर्व ही भिजवाई थी तभी से मन आन्दोलित था।

सन् 1950-51 में जब मैं बी.ए. में पढ़ता था, तभी कहीं पढ़ा था कि वास्तव में जोधाबाई का विवाह अकबर से नहीं हुआ था बल्कि एक ऐसी ही रूपवाली दासी का विवाह उससे कर दिया गया था परन्तु जोधाबाई का क्या हुआ? यह प्रश्न अन चर्चित ही रहा। आज चालीस वर्षों के पश्चात स्मृति पर आये हुए जंग को दूर करने टेबिल पर बैठा हूं तो यह कुरेदन (आपकी पुस्तक पढ़कर) अच्छी लग रही है।

भवदीय

भूपतिराम साकरिया

एक पोस्टकार्ड में वे लिखते हैं-

आज सूं 31 वरस पेहला म्हारी पोथी 'आधुनिक राजस्थानी साहित्य 1900 सूं 1966' प्रगट हुई ही। तीनेक महीना पेहला श्री श्रीमंतकुमारजी व्यास अठै आया हा। उणारो अनुरोध है के इण इतिहास ने म्हूं सन 2000 तांई पूरो करूं। आपसूं सहयोग पोथी-दान रो है। मेहरबानी करने आप आपरी पोथी सुरंगो राजस्थान (निबंध) म्हने मेलावो। आपरी दूजी पोथियां 'गेहरो फूल गुलाब रो' अर 'रंग रूड़ो राजस्थान' म्हारे कने है। अठै वादला घणा, पण मेह थोड़ो है। ऊथलो देरावजो।

सगोठो

डॉ. भूपतिराम बदरीप्रसादोत

एक अन्य पत्र में मेरी कविता-पुस्तक पर उनकी प्रतिक्रिया-

प्रिय भाई डॉ. महेन्द्र

नमस्ते

शनिवार की डाक से आप द्वारा प्रेषित 'कोई-कोई औरत' पुस्तक मिली। मैं तो एक बैठक में ही सारी पुस्तक पढ़ गया। 'पांडुलिपि' में उठाये गये प्रश्न, प्रत्येक रचनाधर्मी के प्रश्न हैं। शंकाओं की लम्बी प्रतिक्रिया के बाद जब उसकी रचना छपती है तो उसका परितृप्त होना स्वाभाविक है। 'नेमप्लेट' मानव के अस्तित्व को झकझोरने वाली है। कविताओं में राजस्थानी शब्दों का प्रयोग मुझे भाया- दो कारणों से। एक उसका हिन्दी पर्याय वहां पर फिट नहीं बैठता था और दूसरा हिन्दी को यदि सचमुच राष्ट्रभाषा का स्वरूप लेना है तो उसे भाषा-भगिनियों की सरिता से शब्दोर्मियां ग्रहण करनी ही पड़ेंगी। मुझे और पिताजी दोनों को पुस्तक भायी।

चारेक दिन पूर्व गुजराज विद्यापीठ, अहमदाबाद के गुजराती विभाग के अध्यक्ष प्रो. कनुभाई जानी मेरे यहां आये थे। राजस्थानी और गुजराती भवाई में तत्वत: कोई अन्तर है या फिर प्रादेशिक भिन्नता के कारण बाह्य अन्तर ही है? राजस्थानी भवाई पर अवश्य ही कोई कार्य आपके यहां हुआ होगा। कृपया इस पर कुछ लिखें। कवि रूप में आप उत्तरोत्तर श्रेष्ठता और प्रसिद्धि प्राप्त करें, यही प्रभु से प्रार्थना है।

भवदीय

भूपतिराम

01 अप्रेल 2015 के पोस्टकार्ड में वे लिखते हैं-

आज 'माणक' मिलियो नै 'माणक' मांय मिलिया आपरा दस माणक-दूहा। मजो आयगो। दो दूहा घणा टणका लागा-

भणियो पण गुणियो नहीं, गुणियो ना भणियोह।
जो भणियो गुणियो पुरुष, वो पाको मणियोह।।
मिनख-मिनख में आंतरो, मिनख-मिनख में फेर।
जो मिनखोचारो करे, वोई मिनख सुमेर।।
इयुं कदैई कदैई माणकां रो थाळ पुरसता रेहवो।
स्वास्थ्य कीकर है, लिखावसी।।

20 फरवरी 2007, मंगलवार को लिखे कार्ड का दरसाव इण मुजब-

यह पत्र में विशेष प्रयोजन से लिख रहा हूं। मारवाड़ में होली के हुड़दंग की एक अश्लील मूर्ति ईलोजी है। क्या मेवाड़ में भी ऐसी कोई मूर्ति है? आप तो लोकसाहित्य के आगार हैं। इस सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी देंगे तो आभारी हूंगा।

मेरे गांव (अब नगर) बालोतरा में, भरे बाजार में साढ़े छह फीट ऊंची तथा पांच फीट चौड़ी इन्हीं ईलोजी की एक विशाल मूर्ति है। ऐसी लोक धारणा है कि कोई बांझ स्त्री यदि होली के दिन इसकी पूजा करे तो उसके गर्भवती होने की सम्भावना है।

भवंतु

भूपतिराम

नोट : इस सम्बन्धी 07 मार्च 2007 को विस्तृत जानकारी लिख भेजी।

दीवाली पर तो हर वर्ष ही छोटी -छोटी लिखी काव्यमय पंक्तियां मुझे भेजते रहते। उत्तर में मैं भी उन्हें उसी कद की काव्य पंक्तियां लिखा करता। यहां उनके द्वारा भेजी कुछ मंगलाक्षरी द्रष्टव्य है-

(अ)
पला मायं लुकाय'र
नैनको दीवो
अंधारा रो नाम शेष करण सारू
हर करती, दीवाळी आई।

(ब)
दीवो जागे
ज्ञान प्रगासे
लिछमी आवे
रिमझिम रिमझिम।

(स)
महेन्द्र के इर्दगिर्द लोक कला संगीत
गीत नृत्य भाषा साहित्य
मनुष्य के चरित्र का प्रकाश उसकी करनी में होता है,
न कि कथनी में।

ऐसा रेखांकन कर नीचे ही नीचे यह पंक्ति लिख भेजी-

(द)
दीवाळी रा दीवा दीठा।
काचर बोर मतीरा मीठा।।
दीवाळी रा दीवा दीठा।
थां माथे लछमीजी तूठा।।
दीवाळी रा दीवा दीठा।
भागवान बणो थे लूंठा।।

(य)
हे मां लिछमी!
थूं श्रीमंता ने
वत्ती श्रीमंताई दे
म्हांने कोई उजर कोनी
पण
लाडू रा भूरा ज्यूं
श्रीमंतांई री थोड़ी अमी वरषा
म्हाणा टापरा, छापरा, झूंपड़ा
माथेई करती जा
सगळा ने खुस्याल बणाती जा
आज आईज वीनती है-

'सर्वे भवन्तु सुखिन:'

सगोठो

भूपतिराम बदरीप्रसादोत

मेले सांस्कृतिक उत्सव के यशस्वी दस्तावेज - बोराणा

उदयपुर (ह. सं.)। मेले हमारी सभ्यता और संस्कृति के सदाबहार सरोकार ही नहीं अपितु अतीत एवं भावी जन्मों के कल्याणकारक भी हैं। ये विचार राजस्थान राज्य मेला प्राधिकरण के राज्यमंत्री दर्जा प्राप्त रमेश बोराणा ने लोकसंस्कृति मर्मज्ञ डॉ. महेंद्र भानावत के निवास पर चाय-चुस्की के दौरान व्यक्त किए। डॉ. भानावत ने बताया कि मेले देव-दर्शन, नदी पवित्रम, अस्थि विसर्जन, महात्मा मिलन पूरा निधि, संस्कृति संगम, खरीद-फरोख्त, प्रिय मिलन के प्रतीक भी हैं इस अवसर पर बोराणा ने कहा कि ऐसे प्रयत्न किए जा रहे हैं कि आमजन को आस्थामूलक जानकारी के साथ ऐसी यथोचित व्यवस्था हो जिससे हर मेलार्थी घर जैसी सुविधा महसूस कर सके। इस अवसर पर डॉ.भानावत ने बोराणाजी का आत्मानंदी अभिनंदन किया। भेंट के दौरान डॉ तुक्तक और रंजना भी उपस्थित थे।

पोथीखाना

स्थूल और सूक्ष्म शरीर के रहस्यों की परत खोलने वाली पुस्तक

हमारी विरासत रहस्यमय जगत को जानने की उत्सुकता और अलौकिक शक्तियों की अदृश्यता के बारे में जिज्ञासु मन बनाये रखने की रहती है। यह सब प्रत्यक्ष अवलोकन एवं अप्रत्यक्ष अनुभव पर आधारित ज्ञान भारत की भूमि पर ही संभाव्य है। हम सब प्राणी स्थूल शरीरी हैं। हमारे सारे सरोकार सीमित हैं। प्रत्यक्ष हैं। झंझट भरे सफल-असफल होने के तथा संघर्ष, संकट और चुनौति लिए हैं। नाना कष्टों से मुकाबला करने, दुःख भोगने के हैं लेकिन हमारे ही बीच वे उच्चात्माधारी मानुष हैं जो अपने सत्कर्मों से पूजित हैं। वन्दनीय हैं। असाधारण और आदर्श हैं।

ऐसे भी हैं जिनके माध्यम से जो कार्य सम्पादित हुए वे मानव के बस के नहीं होते हुए भी उनके द्वारा होने से अचरज भरे हैं। ऐसे व्यक्ति साधारण मानव नहीं होकर असाधारण महामानव संत, महात्मा याकि ऋषि, महर्षि हैं।

गायत्री परिवार के संस्थापक पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने अपने गुरु द्वारा निर्देशित साधनापद्धति की जागरूकता, तन्मयता और एकाग्र पुरुषार्थ के बल पर ही 2400 प्रज्ञापीठों तथा 15000 प्रज्ञा संस्थानों का निर्माण कर जो अनहोना कर्म किया वह सबके लिए अचरजकारी है। वर्तमान में 10 करोड़ से अधिक सदस्य पूरे विश्व में फैले हुए हैं। उन्होंने छोटी-मोटी 3200 पुस्तकें लिखीं।

'हमारी वसीयत और विरासत' पुस्तक में पं. श्रीराम शर्मा ने अपनी जीवनयात्रा के उन अद्भुत अनुभवी पक्षों को बड़ी गम्भीरतापूर्वक विश्लेषित किया है जिनके कारण वे हमारे बीच एक अद्भुत, अनोखे एवं अजूबे व्यक्ति ही रहे। दृश्य-अदृश्य रूप में हमारे समक्ष भी ऐसे महानुभाव हुए हैं परन्तु पं. श्रीराम शर्मा ने उनके जैसे होने पर अपने अनुभवों को लिपिबद्ध कर जो प्रकाशन हमें दिया है उनसे स्थूल और सूक्ष्म शरीरधारी जीवों के बारे में बड़ी अलौकिक एवं आश्चर्यजनक बातें पढ़ने को मिलती हैं।

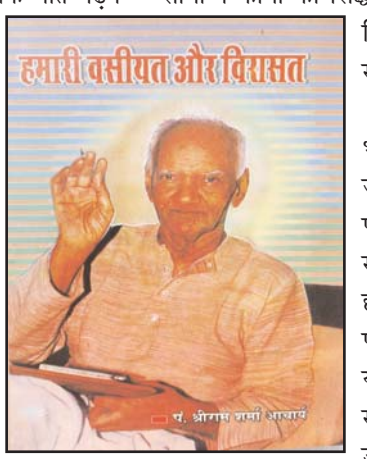

पं. श्रीराम शर्मा लिखते हैं- ''स्थूल शरीर का सीमा बन्धन है। सीमित क्षेत्र, सीमित वजन उठा सकता है। उनके साथ कर्मफल के भोग-विधान जुड़ जाते हैं। यदि लेन-देन बाकी रहे तो अगले जन्म तक वह भार लदा चला जाता है।

रामकृष्ण परमहंस में उपार्जित पुण्य-भण्डार कम था सो हिसाब चुकाने के लिए गले का कैंसर बुलाया गया। आद्य शंकराचार्य को भगंदर का फोड़ा लेकर जाना पड़ा। ऐसे लोग कइयों का कष्ट अपने ऊपर लेते हुए अन्तिम समय हिसाब-किताब बराबर करते हैं ताकि पीछे का कोई कर्म-फल व्यवधान न करे।'' (पृ. 174)

वे लिखते हैं- ''सूक्ष्म शरीर की देखने-सुनने-बोलने की सामर्थ्य अनेक गुनी होती है। एक ही शरीर समयानुसार अनेक शरीरों में प्रतिभाषित हो सकता है। रास के समय कृष्ण के अनेक शरीर गोपियों के साथ सहनृत्य करते दीखते थे। कंस-वध तथा सिया-स्वयंवर के समय उपस्थित समुदाय को कृष्ण और राम की विभिन्न प्रकार की आकृतियां दृष्टिगोचर हुई थीं।

भूत-प्रेत चले तो सूक्ष्म शरीर में जाते हैं पर वे बहुत ही अनगढ़ स्थिति में रहते हैं। पितर-स्तर की आत्माएं उनसे कहीं अधिक सक्षम होती हैं। उच्च स्तरीय क्षमता सम्पन्न तपस्वी-स्तर के होते हैं। सामान्य काया को सिद्ध-पुरुष-स्तर की बनाने के लिए अगला कदम सूक्ष्मीकरण का है।

शरीर का हल्का-भारी, दृश्य-अदृश्य हो जाना, यहां से वहां जा पहुंचा प्रत्यक्ष शरीर के रहते सम्भव नहीं; कोई मनुष्य हवा में नहीं उड़ सकता न पानी पर चल सकता है। यह एक साधना है जो स्थूल शरीर के रहते और उसे त्यागने के उपरान्त भी करनी पड़ती है। अण्डा जब तक पक नहीं जाता तब तक एक खोखले में बन्द रहता है फिर वह छिलके को तोड़कर चलने-फिरने और दौड़ने-उड़ने लगता है। ये ही अभ्यास सूक्ष्मीकरण के हैं जो हमने पिछले दिनों किये हैं।

सूक्ष्म शरीरधारियों में अधिकांश का उल्लेख हानिकारक या नैतिक दृष्टि से हेय स्तर तक हुआ है। अतृप्त विक्षुब्ध स्तर के योद्धा रणभूमि में मरने के उपरान्त ऐसे ही कुछ हो जाते रहे हों। राजर्षि और ब्रह्मर्षि तो स्थूल शरीरधारी ही होते थे पर जिनकी गति सूक्ष्म शरीर में भी काम करती थी वे देवर्षि कहलाते थे। जहां आवश्यकता अनुभव करते वहां भक्तजनों का मार्गदर्शन करने के लिए अनायास ही जा पहुंचते थे। कइयों ने किन्हीं गुफाओं में, शिखरों पर अदृश्य योगियों के दृश्य तथा दृश्य को अदृश्य होते देखा है।'' (पृ. 177)

ऐसे बहुत सारे दृश्यावलोकन मुझे भी लोकदेवता कल्लाजी राठौड़ ने अपने सेवक सरजुदासजी की काया में प्रवेश कर कराये। प्रसंग था मीरांबाई की खोज में राजस्थान के अलावा गुजरात, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश तथा तमिलनाडु के अनेकों तीर्थस्थानों, देवदर्शनों तथा मन्दिरों की परिक्रमा, दर्शना का और फिर मैंने 'निर्भय मीरां' नाम से जो पुस्तक लिखी, विद्वानों ने उसे कई रूपों में विवेचित किया।

प्रस्तुत 224 पृष्ठीय पुस्तिक में पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने 24 विषयों के बंध में अपने जीवनानुभवों का जो वर्णन किया, उसे पढ़कर यह स्पष्ट हो जाता है कि हम अपने जीवन में जो कुछ विचित्र अनुभव करते हैं या दूसरों के अनुभवों से सुनते हैं उनके जमीनी कारणों को जानकर अपने सोच को स्वस्थ, सुखद तथा शंकाओं से विहीन बना सकते हैं।

इसका प्रकाशन युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट, गायत्री तपोभूमि, मथुरा-281003 से हुआ है। मूल्य मात्र 80 रूपया है। शान्तिकुंज हरिद्वार से भी इसे प्राप्त किया जा सकता है जहां गायत्री परिवार का प्रमुख केन्द्र है और वहां से अखण्ड ज्योति, युग निर्माण योजना तथा प्रज्ञा अभियान नामक पत्रिकाएं भी प्रकाशित होती हैं। - **म.भा.**

घड़सी बाबा की घर बीती कहानियां

''टाबर स्कूल रै थलै सूं बंधग्या। थोड़ा छूटै तो टीवी साम्हीं बैठ जावै। गुवाड़ सूनो है।.... गणगोर्यां पर गीत गावणआळी लुगायां कोनी दीखै। 'खींपोळी' अर 'खींपा छाई रात' गावणआळी लुगायां गुमगी। धीवड़्या आवै तो घर मायं बड़ जावै। वै घरां साम्हीं बैठ'र ठण्डी रात में 'बीरो' कोनीं उगेरै..... घड़सी बाबो सोचै-ओ गांव इसो कियां हुयग्यो! राधा री मां केवै, 'घड़सीजी, जमानो नीं आदमी बदळग्यो।'' (पृ. 48, घड़सी बाबा की उदासी)

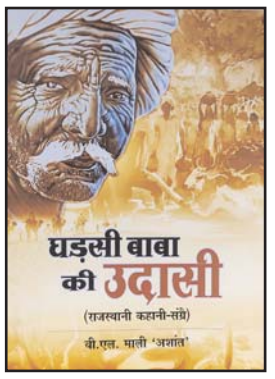

'घड़सी बाबा की उदासी' नामक संग्रह की सभी इक्कीस राजस्थानी कहानियां इसी भावभूमि की, क्षरित होते मानव-मूल्यों की, बदलते समय की बोदी आहट की, संस्कारों की संस्कारजनित धूलि-धूसरित होती रेलमपेल की दास्तान का दस्तावेजीकरण करती मिलती हैं।

कहानी लेखक बी. एल. माली 'अशान्त' हिन्दी-राजस्थानी के ख्यातलब्ध एक ऐसे कथाकार हैं जिनके तीन उपन्यास, सौ कहानियों का सफर अद्यावधि नित नये आयाम तथा कथा-साहित्य को समृद्धि की ओळखाण देता रहा है। बुरी नजर तथा बैजूं पर लाखेणी पुरस्कार मिल चुके हैं तो कहानियों पर टी.वी. सीरियल बन चुके हैं। भाषा विज्ञान पर लिखी इनकी पुस्तकों ने अलग पहचान बनाई है। सच लिखने और खरा कहने की शक्ति ने इन्हें जो उपलब्धि दिलाई उसके कारण वे अपनेआप में अकादमी हैं।

ज्ञान गीता प्रकाशन, पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32 से प्रकाशित 127 पृष्ठीय यह खूबसूरत पोथी 250 रूपया की कीमत लिये है।

- डॉ. तुक्तक भानावत

श्री सिद्धांचल सौरभ

तीर्थ कोई भी हो; सभी तीर्थ पुण्य देने वाले, पाप हरने वाले तथा जीवन की शुद्धि कर आत्मोत्थान करने वाले हैं पर तीर्थों में तीर्थ-शिरोमणि श्रेष्ठतम तीर्थराज सिद्धाचल की महिमा अपरम्पार है। ग्रन्थ प्रणेता गणि मनितप्रभसागर का 'श्री सिद्धांचल सौरभ' तीर्थेन्द्र सिद्धाचल ही है जिसे एक सौ आठ नामों से सिद्धि-प्रसिद्धि मिली है। उनका यह ग्रन्थ सौ वां की संख्या लिये है जो सोने में सुहागा बन पड़ा है। तीर्थों के ताज और सिद्धों के साज जैसे विशेषण लिये यह भूमि पालीताणा नाम से जगजाहिर है। यह गुजरात में है।

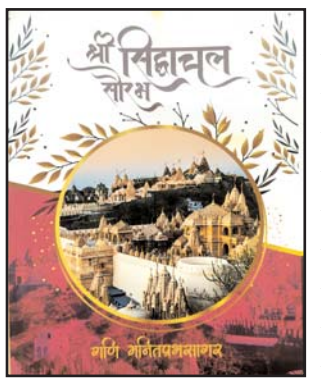

इस तीर्थ की महिमा का वर्णन अनेक विज्ञों ने अनेक रूपों में किया है। ज्ञाताधर्मकथा से लेकर खरतरगच्छ गुर्वावली तथा शत्रुंजयरास से लेकर हर्षनन्दन की चैत्य परिपाटी जैसे ग्रन्थों, शिलालेखों, प्रशस्तियों, पट्टावलियों तथा काव्य-रचनाओं के अगणित पृष्ठ इस तीर्थ का बखान करने पर भी अथक बने हुए हैं।

गणि मनितप्रभसागरजी ने इस गौरवशाली ग्रन्थ को आठ प्रस्तावों तथा एक सौ चौबीस अध्यायों में विभक्त कर जो गरिमामय गुणानुवाद किया है वह सर्वथा अतुलनीय, अनूठा और अद्वितीय बन पड़ा है।

ग्रन्थ के प्रारम्भ में आचार्य जिनमणिप्रभसूरि ने इस तीर्थराज की महिमा में लिखा है- शत्रुंजय तीर्थ की महिमा का सांगोपांग वर्णन वृहस्पति के लिए भी सम्भव नहीं है। यहां का अणु-अणु अनन्त सिद्ध आत्माओं की साधना और उसके परिणाम का साक्षी है। आदिनाथ परमात्मा के श्रीचरणों से पावन हुए इस गिरिराज ने प्रथम से लेकर चरम तीर्थंकर की स्पर्शना के परमसुख का अनुभव किया है। तेईस तीर्थंकर पर्याय में तथा नेमिनाथ गृहस्थ पर्याय में यहां पधारे।

आचार्यश्री जिनक्रान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट, जहाज मन्दिर, मांडवला-343042 से प्रकाशित 312 पृष्ठीय यह ग्रन्थ मात्र 100 रूपये का है ताकि सभी को यह सुलभ हो सके।

- डॉ. कहानी भानावत

पशुचारक ठाट्या पर अनमोल ग्रन्थ

भारत गांवों का देश है। गांव कृषि पर आधारित हैं। कृषि किसानों का मुख्य धंधा है। इसमें पालतू पशुओं की मुख्य भूमिका रहती है। इनमें गाय सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है जिसे माता का दर्जा हांसिल है। गायों को चराने वाला ग्वाला होता है। इसे पशुचारक कहा जाता है। गांव के पशुओं को चराने वाली यह जाति ही बन गई। अनवरत पशु चराने का कार्य करने वाली यह जाति गांव वालों पर निर्भर रहती है।

दिनभर ग्वाले के संरक्षण में पशु रहने के कारण पूरा गांव चारक परिवार के भरण-पोषण का ध्यान रखता है। वर्ष के बारहों माह चराने वाला चारक कभी कोई अवकाश नहीं रखता, केवल दीवाली पर वह अवकाश रखता है। दूसरे दिन प्रत्येक गाय पालक के घर जाकर शुभ मंगल करता है।

प्रस्तुत पुस्तक पशुचारक 'ठाट्या' के जीवन परिवेश को वर्णित करती अपनी तरह की एक ही पुस्तक है जिसमें ठाट्या जीवन तथा पशु पालन के बहुत ही बेहतरीन छायाचित्रों के साथ प्रभावी लेखन किया गया है। उम्दा आर्ट पेपर पर बहुरंगी इस कलात्मक पुस्तक में ठाट्या जनजाति, उसके रीतिरिवाज, शिल्प, त्यौहार, विश्वास के साथ ही परिभाषित शब्दावली तथा सर्वेक्षण ग्रामों की सूची दी गई है। इस दृष्टि से ठाट्या पशु चारकों का यह जमीनी अध्ययन लेखक राजेन्द्र मालवीय तथा छाया चित्रकार अमोल सरागे को उनकी गहरी दृष्टि, समर्पित मन तथा आस्थावान उम्मीद एवं प्रणमना पुरुषार्थ के लिए बहुत-बहुत बधाई।

आशा है, अन्य ऐसी ही अनाम, अचर्चित जातियों पर लेखन को बढ़ावा मिलेगा। जनजातीय लोककला एवं बोली विकास अकादमी, भोपाल का यह प्रकाशन मात्र 300 रूपये का है ताकि अधिकाधिक विद्वान एवं शोधार्थी इसे अपने लिए सुरक्षित कर सकें। - **म. भा.**

स्मृतियों के शिखर (152) : डॉ. महेन्द्र भानावत

मुंह में पान दबी गिलौरी से भवानी भाई की याद आई

श्री भवानीशंकर उपाध्याय, भवानी भाई से मेरा सम्पर्क बहुत बाद में सन् 1971 से 76 के बीच अधिक रहा। वे कहानीकार प्रेमचन्द की पीढ़ी के थे। जब उदयपुर से जनार्दनराय नागर और भवानी भाई बनारस पढ़ने गये तब दोनों प्रेमचन्द के बहुत नजदीक आये और पारिवारिक बन गये। बाद में जब राजस्थान साहित्य अकादमी ने प्रेमचन्द के सुपुत्र अमृतराय को बुलाया तब अमृतराय के साथ उनकी पत्नी, सुभद्राकुमारी चौहान की सुपुत्री सुधा भी थीं। भवानी भाई ने अपने निवास पर उनसे मेरी भी भेंट कराई थी।

डॉ. लक्ष्मीनारायण नन्दवाना तब अकादमी के सचिव थे। उन्होंने बताया कि 23 अप्रेल 1982 को सेक्टर 4 स्थित अकादमी के नये भवन का मुख्यमंत्री शिवचरण माथुर ने उद्घाटन किया और 24 तथा 25 अप्रेल को एक विशाल लेखक सम्मेलन का आयोजन किया गया था तब डॉ. प्रकाश 'आतुर' अकादमी के अध्यक्ष थे।

इस सम्मेलन का विषय 'आज का परिवेश और साहित्यिक चुनौतियां' रखा गया था। इसमें सम्मेलन के उद्घाटक अमृतराय की विशिष्ट भूमिका रही।

सम्मेलन में राजस्थान के नन्द चतुर्वेदी, डॉ. नवलकिशोर, डॉ. सत्येन्द्र, जुग मन्दिर तायल, डॉ. जयसिंह 'नीरज', डॉ. शान्ति भारद्वाज, कोमल कोठारी, राजेन्द्र सक्सेना, डॉ. जगदीश शर्मा, डॉ. रामकृष्ण दुग्गड़, ओंकार पारीक जैसे नामचीन लेखकों ने भाग लिया। अब तो ये सभी स्मृतिशेष हैं। इसके अलावा डॉ. हेतु भारद्वाज, डॉ. नन्दकिशोर आचार्य, डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल, डॉ. हितेष व्यास, डॉ. भगवतीलाल व्यास तथा मेरी भी सक्रिय भागीदारी रही। उस समय का मंचासीन अमृतराय का मेरे द्वारा लिया गया फोटो आज भी मेरे संग्रह में जब-तब की याद ताजा कर देता है।

उपाध्यायजी प्रारम्भ में जनार्दनराय के साथ गद्य-काव्य लिखने वालों में खूब चर्चित रहे तब उदयपुर में दिनेशनन्दिनी चोरड़िया, देवीलाल सामर का भी गद्य-काव्य लेखकों में बड़ा नाम था। बाद में उपाध्यायजी और निरंजननाथ आचार्य ने वकालात के क्षेत्र में अच्छी पकड़ बनाई। दोनों पक्के मित्र थे और पंचवटी में पास-पास उनका निवास था। दोनों अपने क्षेत्र के कुशाग्र निष्णात और राजनीति के चतुर खिलाड़ी थे। एकबार डॉ. प्रकाश 'आतुर' आचार्यजी से भेंट करने गये तब मुझे भी उनके निवास पर मिलाया।

डॉ. आतुर ने मुझे बताया कि आचार्यजी अच्छे धारदार लेखक थे। जैसे कठपुतली खेल में कठपुतलियां एक-दूसरी को पटखनी देतीं लगती हैं वैसे ही राजनीति में आचार्यजी का दबदबा बना रहता। उनके वहां हर समय मिलने आने वालों की भीड़ बनी रहती। वे किसी को निराश नहीं करते पर बड़ी चालाक-चतुराई से उन्हें राजी कर विदा करते।

मेरे साहित्यिक मित्र क़मर 'मेवाड़ी' ने आचार्यजी पर अपनी संस्मरण-पुस्तक 'यादें' में लिखा- 'आचार्य साहब दबंग, बेबाक और स्पष्ट वक्ता थे। वे गरीबों के मसीहा, दोस्तों के दोस्त और विरोधियों के कट्टर दुश्मन थे। उनके विरोधी इतनी सतर्कता और सावधानी से अपना काम करते थे कि उनकी कारस्तानियों की आचार्य साहब को भनक तक नहीं लगने पाये। वे जानते थे कि मालूम होने पर पता नहीं, उनका वे क्या हश्र करेंगे।' उपाध्यायजी की तरह आचार्यजी ने भी बहुत लिखा। वे प्रतिदिन डायरी लिखते थे। ऐसी अनेक डायरियों में तब की राजनीति के अनेक छल-छद्म करने वाले शैतानी चेहरों के षड़यंत्रों को बेनकाब करने वाली दास्तानें उन डायरियों के हस्तलिखित पन्नों में खोजे जा सकते हैं।

उनके सबसे बड़े पुत्र कर्नल देशबंधु आचार्य भी साहित्यकारों के बीच सुरमई पैठ बनाये हैं। क़मर 'मेवाड़ी' ने मुझे कई बार उनसे सुखद भेंट कराई। उन्होंने अपने पिताश्री की स्मृति में आचार्य निरंजननाथ साहित्य सम्मान प्रारम्भ कर अच्छी प्रतिष्ठा अर्जित की। कर्नल देशबंधु की पत्नी सुधा आचार्य भी श्रेष्ठ कवयित्री हैं।

उपाध्यायजी को मैंने बमुश्किल चलते देखा। अपने घर में भी वे लाठी के सहारे ही संभल-संभल कर पग धरते थे पर थे बड़े हंसमुख, फक्कड़ और सब तरह की खबरों के जागरूक प्रहरी। वे मोटी खादी का पाजामा और आधी बाहों का कमीज पहने रहते। उनकी जेब में एक पेन सदैव लगा रहता जिसका उपयोग करते तो मैंने उन्हें कभी नहीं देखा। वे बातों के बड़े रसिया थे। स्वयं तो रस लेकर बात कहते ही पर अन्यों की बातों में भी वे रस घोलते मजे किये मिलते।

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के शिष्य होने के कारण उपाध्यायजी दर्शन और मनोविज्ञान के क्षेत्र में अपनी अच्छी दखल रखते थे। मैंने उनमें सदा ही ज्ञान की गहराई, विज्ञान का मन, साहित्यकार की भावुक सहृदयता एवं अधिनायक का तर्कशील मस्तिष्क पाया। उनकी चौपाल पर हर तपके के व्यक्तियों का मजमा लगा रहता। उनकी महफिल में साहित्य, राजनीति, दीवानी, फौजदारी से लेकर सड़क तथा पट्ठे पहलवानी जैसे गपाष्टिक पुराणों के चौखे चौपदों की बहार बनी रहती।

इस बीच वे अपनी चांदी की छोटी-सी डिबिया से पान का एक चौथाई टुकड़ा निकाल उस पर कत्थे-चूने की डण्डी घुमाते सुपारी का बुरा मिलाकर उसकी बीड़ अपने मुंह में दबाते मिलते। कभी-कभी एक बीड़ मेरे लिए भी बनाते। कहते, मेरे अपने खास मिलने वालों को ही मैं देता हूं। मैंने कभी उन्हें बिना गिलौरी के खाली मुंह नहीं देखा। अन्यों की तरह मैंने उन्हें अपने मुंह का पान-रस इधर-उधर थूंकाथूंकी करते भी नहीं देखा।

डॉ. राधाकृष्णन के शिष्य होने का उन्हें बड़ा फख्र था। वे ऊंचाई से उनकी बात करते और कुर्सी पर बैठे-बैठे ही गौरवमण्डित उत्कर्ष में चले जाते।

उपाध्यायजी ने मुझे बताया कि जनार्दनराय नागर और उन्होंने भी दिनेशनन्दिनी चोर्डिया की तरह प्रेम-पथ के बहुत से गद्य-काव्य लिखे। नागरजी से तो उनकी अपने यहां महीने-दो-महीने में एकाध बार बैठक हो ही जाती। उनका उपन्यासकार जैनेन्द्रकुमार तथा अज्ञेय से भी बहुत अच्छा सम्पर्क था।

जब नागरजी साहित्य अकादमी के अध्यक्ष थे तब जैनेन्द्र एवं अज्ञेय को भी आमंत्रित किया था। जैनेन्द्रजी को नागरजी ने जब अपने घर भोजन कराया तब मुझे भी बुलाया था। वहीं मैंने उनसे एक लम्बी बातचीत की थी जो 'साहित्यकार के लिए प्रेयसी अनिवार्य है' विषय के इर्दगिर्द हुई। उसी समय चेटक सर्कल स्थित विजय स्टूडियो में मैंने जैनेन्द्रजी के साथ फोटो भी खींचवाया था। यह बातचीत अनेक पत्रों में बड़ी हलचल लिये रही।

नागरजी ने जीवन के अन्तिम दिनों तक सैकड़ों गद्य-काव्य लिखे। अपने साप्ताहिक 'जनमंगल' के हर अंक के मुखपृष्ठ पर उनका गद्य-काव्य पढ़ने को मिलता। देवीलाल सामर ने भी अनेक गद्य-काव्य लिखे और बड़ी पत्रिकाओं में छपे। बाद में वे कलाकार के रूप में प्रसिद्ध हुए। उन्होंने 1952 में भारतीय लोककला मण्डल की स्थापना की तो उनका सारा ध्यान लोकनृत्यों, नृत्यनाट्यों की रचना द्वारा अपने कलाकार दल सहित विश्वव्यापी प्रदर्शन देने में लग गया।

लेकिन उनका गद्य-काव्यकार तब पुनः अस्तित्व में आया जब उनके प्रिय आत्मज-रूप गोविन्द कर्णिक का अचानक 24 मई 1966 को निधन हो गया। मैं सन् 1958 से कलामण्डल में आ गया। गोविन्द बाबू एक होनहार कलाधर्मी फोटोग्राफर तथा डोक्युमेंट्री फिल्म निर्माता थे। उनकी स्मृति में कलामण्डल से गोविन्द स्मारिका का 08 सितम्बर 1966 को प्रकाश किया। मैंने धर्मयुग में भी उन पर लिखा।

इस सदमे का सामरजी पर बड़ा गहरा असर पड़ा। फलसवरूप उनका गद्य-काव्यकार-मन पुनः सजीव हुआ और 'अन्तर्मन' नामक पचास पृष्ठीय कृति लिखी जिसका प्रकाशन 1967 में हुआ। कुल तेरह गद्य-काव्यों की यह कृति पीड़ा से परिचालित, आंसुओं से आप्लावित तथा उच्छवासों से विगलित सामरजी की श्रेष्ठ कृति सिद्ध हुई।

उपाध्यायजी ने एक दिन मुझे उनके लिखे गद्य-काव्य का एक संकलन भूमिका लिखने के लिए दिया और कहा कि इसका प्रकाशन तो नहीं होना है पर यह मेरे कक्ष में अन्य पुस्तकों के साथ जिल्दबंधी में सुरक्षित रखी रहेगी। मैंने पाया कि उनके गद्य-काव्यों में जवानी का छलकता एक मादक रस है जो प्रेम में उद्वेलित हुआ अनेक रंगीन सपनों की बुनावट पाकर भी उन्मुक्त होने की तड़फन लिये है। उनका रसिया किसी प्रेमिका के मन की परतों में छिपा भंवर-कमल की तरह बंध जाना चाहता है।

किन्हीं-किन्हीं गद्य-काव्यों में आत्मकथ्य के असल तथ्यों का अनावरण है तो कुछ में खुली तबीयत की साफगोई स्पष्ट बयानी है। तब की ये रचनाएं यदि तब ही छप जातीं तो निश्चय ही साहित्य में एक धमाका देतीं महत्त्व पातीं। सोचता हूं, साहित्य के बाजार में कभी-कभी वे अनछपी अंधेरी रचनाएं भी समय पाकर अधिक प्रकाशवती हो जाती हैं और ऐसा भी होता है जब प्रकाश पाई रचनाएं भी अंधेरे में भटक जाती हैं।

तब इन लोगों का समय था। इनकी तूती बोलती थी। इनका बजंता ढोल था लेकिन बाद के समय में सामरजी भारतीय लोककला मण्डल खोल प्रदर्शनधर्मी लोककलाओं के कलाकार बन गये। नागरजी राजस्थान विद्यापीठ के माध्यम से साहित्य और राजनीति के दो घोड़ों की सवारी कर अपना प्रभुत्व दर्शाते रहे। दिनेशनन्दिनी बिस्कूट वाले डालमियाजी से शादी कर उनकी कोठी में सृजन करती रहीं। सामरजी ने मुझे एकबार दिल्ली में उस विशाल कोठी में उनसे भेंट कराई थी। अब तो सभी की बस यादें ही रह गई हैं।

छोटे पुरस्कारों में बूंद से मोती बनने की सामर्थ्य

उदयपुर (ह. सं.)। 01 नवम्बर 2022 को विज्ञान समिति में धींग पुरस्कार समारोह आयोजित हुआ। अध्यक्षता डॉ. कुन्दनलाल कोठारी ने की। मुख्य अतिथि डॉ. महेन्द्र भानावत थे जबकि विशिष्ट अतिथि डॉ. देव कोठारी एवं शांतिलाल मेघवाल थे। इसमें डाड़मचंद 'डाड़म' को कन्हैयालाल धींग एवं दीपा पंत 'शीतल' को उमरावदेवी धींग पुरस्कार से सम्मानित किया। समारोह की गरिमा में श्रेणीदान चारण, पुष्कर गुप्तेश्वर, पं. नरोत्तम व्यास, रामदयाल मेहरा, के. पी. तलेसरा, डॉ. करुणा दशोरा तथा प्रमिला शरद व्यास की उपस्थिति दर्ज की गई। आयोजन संस्था युगधारा थी। इस अवसर पर डॉ. ममता जैन को शैक्षणिक उपलब्धियों के लिए रजत-पदक व प्रशस्तिपत्र प्रदान किया गया।

डॉ. कुंदनलाल कोठारी ने कहा कि यह समारोह प्रेरणा देता है कि हर व्यक्ति अपने माता-पिता का आदर करे और साहित्य को प्रोत्साहित करे। डॉ. महेन्द्र भानावत ने कहा कि छोटे पुरस्कार उस बूंद की तरह हैं जिसमें मोती बनने की सामर्थ्य होती है। कोई समुद्र मोती नहीं बन सकता। छोटे पुरस्कारों में आदमी की गंध, आत्मीयता तथा पारिवारिक स्नेह-सौहार्द का उमड़ाव रहता है। उन्होंने सुझाव दिया कि उमरावदेवी धींग पुरस्कार किसी नारी-रचनाकार को दिया जाय ताकि उस वर्ग का भी प्रतिनिधित्व हो सके। इस दौरान डॉ. भानावत ने अपने स्कूली सहपाठी कन्हैयालाल धींग को भी याद किया।

डॉ. देव कोठारी ने कहा कि पुरस्कार के संस्थापक डॉ. दिलीप धींग पूरे देश में मेवाड़ का मान बढ़ा रहे हैं। शांतिलाल मेघवाल ने कहा कि डॉ. धींग उनके गांव बम्बोरा एवं पूरे राजस्थान का गौरव बढ़ा रहे हैं। डॉ. दिलीप धींग ने कहा कि जिस प्रकार सम्मान पाने में खुशी होती है, उसी प्रकार सम्मान देने में भी खुशी मिलती है। युगधारा संस्थापक डॉ. ज्योतिपुंज ने इन पुरस्कारों की निरंतरता को रेखांकित किया। संचालन किरणबाला 'किरण' ने किया। समारोह में डॉ. मदन कोठारी, रोड़ीलाल धींग, आशा दाणी, हंसा जारोली, सुरेशचंद्र धींग, तेजसिंह पोखरणा, डॉ. प्रीति धींग मौजूद थे।

कांकरिया व डॉ. हाड़ा को बिहारी पुरस्कार

उदयपुर (ह. सं.)। हिंदी के चर्चित साहित्यकार श्रीमती मधु कांकरिया एवं डॉ. माधव हाड़ा को क्रमशः 2021-2022 का 31वां एवं 32वां बिहारी पुरस्कार संयुक्त रूप से 9 नवम्बर 2022 को सुखाड़िया विवि के सभागार में प्रदान किया गया। कुलपति प्रो. इन्द्रवर्धन त्रिवेदी ने दोनों साहित्यकारों को ढाई लाख रुपये, प्रशस्ति पत्र और प्रतीक चिह्न प्रदान किए। मधु को उनके उपन्यास 'हम यहां थे' एवं डॉ. हाड़ा को आलोचनात्मक कृति 'पचरंग चोला पहर सखी री' के लिए दिया गया।

के.के .बिरला फाउंडेशन के निदेशक डॉ. सुरेश ऋतुपर्ण ने कहा कि के.के. बिरला ने शिक्षा, संस्कृति और शिक्षाविदों जैसे क्षेत्रों में काम करने के उद्देश्य से फाउंडेशन की स्थापना की थी। बिहारी पुरस्कार फाउंडेशन द्वारा स्थापित तीन साहित्यिक पुरस्कारों में से एक है। निर्णायक समिति के अध्यक्ष हेमंत शेष हैं।

शब्द रंजन

उदयपुर, मंगलवार 15 नवम्बर 2022

सम्पादकीय

समय-समय का सार

समय को ऋषि-मुनियों, साधु-सन्तों तथा विद्वान-मनीषियों ने अनेक रूपों में परिभाषित किया है। समय-समय की बात, समय की खेती, समय बड़ा बलवान जैसे अनेक जुम्लों में अनेक कथन मिलेंगे। हर युग में समय का अपना अनूठा अस्तित्व रहा।

धरती, आकाश, हवा, अग्नि, पानी; इन पांच तत्वों से यह सृष्टि परिचालित है। हमारी पांचों उंगलियां भी इसी की सूचक हैं। नाड़ी विशेषज्ञ इन उंगलियों से जुड़ी नसों का बखान भलीप्रकार कर सकते हैं कि पूरे शरीर को ये कैसे और किस प्रकार नियंत्रित कर सकती हैं।

प्रकृति का अध्ययन करने पर भी इन तत्वों की पर्यावरणीय उपयोगिता को भलीभांति समझा जा सकता है। स्थूल शरीर और सूक्ष्म अशरीरी जीवों को भी इन तत्वों से जोड़कर कई निष्कर्ष हाथ लग सकते हैं। यह सारा अध्ययन सामान्य लोगों के बूते का नहीं है पर लोक में जो मान्यताएं हैं उनका अध्ययन भी कई तरह के अनूठे निष्कर्षों से हमें चकित किये रहता है।

ऐसे ही युग-सत्य का अध्ययन हमारे लिए उपयोगी हो सकता है। समझेबुझे मनीषियों ने ऐसा अध्ययन-अन्वेषण किया है। उनके अनुसार सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग का हालचाल जाना जा सकता है।

इस दृष्टि से सतयुग के प्राणियों में वायु तत्व का प्राधान्य था। उसके बाद त्रेता में अग्नि तत्व, द्वापर में जल तत्व और कलियुग में पृथ्वी तत्व प्रधान रहे। पृथ्वी तत्व अन्य सभी तत्वों से स्थूल है इसलिए आधुनिक काल में उस तरह का तप सम्भव नहीं रहा जैसा पहले के कालों में था। अब यदि कोई उस तरह का कठिन तप भी करता है तो भाव भूमि नहीं होने के कारण हानिकारक ही सिद्ध होता है। अत: समय की गति, प्रकृति के अनुसार ही मनुष्य को अपना चरित्र, चाल और जीवनचक्र बनाना चाहिये।

पत्र पिटारी

शब्द रंजन ज्ञान का रोचक रंजन

शब्द रंजन मुझे नियमित रूप से प्राप्त हो रहा है। इसमें प्रकाशित सामग्री विशेषत: राजस्थान की लोकसंस्कृति और साहित्य पर बहुत ही ज्ञानवर्धक और रोचक होती है। पिछले एक अंक में प्रोफेसर ओमानन्द सारस्वत आचार्य पर विस्तृत आलेख प्रकाशित किया था। वे मेरे अत्यंत समीप रहे। चंडीगढ़ प्रवास में उनसे नियमित भेंट होती थी। मुझे उनके निधन की सूचना आपके समाचार-पत्र से ही मिली। मन बहुत दुखी हुआ। ओमानंद के गहन अध्ययन और उनकी बौद्धिक चेतना ने मुझे बहुत प्रभावित किया। उनके शेष परिवार के विषय कोई जानकारी हो तो सूचित करने की कृपा करें। आशा है सानंद होंगे।

मनोहर अभय, प्रधान संपादक अग्रिमान

डॉ. कुंजन आचार्य को 'माणक अलंकरण'

उदयपुर (ह. सं.)। सुखाड़िया विवि में पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. कुंजन आचार्य को 13 नवंबर को पत्रकारिता क्षेत्र का प्रतिष्ठित 'माणक अलंकरण-विशिष्ट पुरस्कार' मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने प्रदान किया। इसके तहत प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह 7100 रुपये की राशि थी। समारोह में पदम मेहता, जैनाचार्य डॉ. लोकेश मुनि एवं तकनीकी शिक्षा मंत्री सुभाष गर्ग उपस्थित थे।

बाल दिवस पर बच्चों का सम्मान

जयपुर (ह. सं.)। राजस्थान ललित कला अकादमी एवं पं. जवाहरलाल नेहरू बालसाहित्य अकादमी द्वारा आयोजित बालदिवस समारोह में मुख्य अतिथि फारूक

आफरीदी ने कहा कि बच्चे देश की अमूल्य धरोहर हैं। बच्चों के साथ संवेदनशील दृष्टिकोण रखना और उनकी प्रतिभाओं को निखारना समाज का दायित्व है। आफरीदी ने बालकवि सम्मान तथा चित्रकला प्रतियोगिता के विजेता बच्चों को पुरस्कृत किया। 14 कवियों को 5100-5100 रुपए और 28 बाल चित्रकारों को एक-एक हजार रुपए के पुरस्कार दिए गए।

चैयरमेन इकराम राजस्थानी ने कहा कि राजस्थान सरकार ने देश की पहली बालसाहित्य अकादमी का गठन कर एक नया इतिहास रचा है। अतिथियों में ललित कला अकादमी अध्यक्ष लक्ष्मण व्यास, अनुसूचित जाति आयोग उपाध्यक्ष अवधेश दिवाकर, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी के निदेशक डॉ. बी.एल. सैनी, नेहरू बालसाहित्य अकादमी के सचिव राजेन्द्रमोहन शर्मा ने समारोह को गरिमा प्रदान की।

खुजराहो में 'लोक में अलंकरण' पर सार्थक संगोष्ठी

खजुराहो (ह. सं.)। भारत में अलंकरण बहुत आत्मिक विषय है और नर- नारी सभ्यता के उष:काल से ही देह, भूमि और भित्तियों का अलंकरण करते रहे हैं। उक्त विचार जनजातीय लोककला एवं बोली-विकास अकादमी भोपाल द्वारा 6 से 8 नवम्बर 2022 तक आयोजित 'लोक में अलंकरण' विषयक संगोष्ठी में उभरे।

डॉ. जुगनू, डॉ. पारे और डॉ. पटेल

अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए डॉ. भगवानदास पटेल ने कहा कि अलंकारों का आधार हमें भील और अन्य जनजातियों के संस्कार व संस्कृति में खोजना चाहिए। जनजातियां अपने अनुष्ठानों में अलंकारों और सजावट का उपयोग करती हैं। उन्होंने डूंगरी भीलों के प्रसंग में अलंकारों की अंत:कथाओं को भी सोदाहरण विवेचित किया।

डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' ने बीज-वक्तव्य में कहा कि अलंकरण भूमि का हो या भित्ति अथवा देह का; सबका हेतु धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रहा है। भारतीयों का मन अलंकरण प्रिय और अलंकरणों का साधक रहा है। अलंकरण सज्जा के साथ स्वास्थ्य और समृद्धि के सूचक होते हैं। यही कारण है कि द्वार, देहरी, दीवार और देवालय तक उत्तमोत्तम रूप से श्रृंगारित किए जाते हैं।

अकादमी निदेशक डॉ. धर्मेन्द्र पारे ने संगोष्ठी के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते कहा कि अलंकरण प्राकृतिक रूप में हर काया को सुलभ होते हैं और कृत्रिम रूप में बनाए जाते हैं। ये हमारे अनुष्ठान, लोकाचार और व्रत, त्योहारों को पूर्णता प्रदान करते हैं।

इस अवसर पर डॉ. जुगनू द्वारा लिखित 'अलंकरण: देह, भूमि और भित्ति' पुस्तक तथा अकादमी द्वारा संगोष्ठी पर केंद्रित चौमासा के 121वें अंक का पाठकार्पण किया गया। शुभम चौहान ने संचालन किया।

दूसरे दिन के अध्यक्ष पद्मश्री डॉ. अवधकिशोर जड़िया ने कहा कि कला सारी सृष्टि में व्याप्त है। पूरी प्रकृति और उसका अनुसरण करती मानवीय कृति, कलात्मक सर्जना के प्रति उत्तरदायी है। कला व्यक्ति को स्वस्थ और पुष्ट करती है, व्यक्ति अपने मन की संवेदनाएं, अपना सर्वश्रेष्ठ, अपनी कला-रचना में उकेरता है।

उज्ज्वला समाधान डांगे ने महाराष्ट्र की आंगन सज्जा को रेखांकित किया। प्रवीण कुमार ने कश्मीर में पर्वोत्सवों के अलंकरणों को स्पष्ट किया। डॉ. अलका यादव ने पशु अलंकरणों की परंपरा को समझाया। डॉ. भुवनेश्वर दुबे ने अलंकारों में लोक विश्वास, पूर्णिमा चतुर्वेदी ने लोकचित्रों पर जानकारी प्रदान की। डॉ. दीपा दत्तात्रेय कुचेकर ने स्वास्तिक अलंकरण परम्परा, डॉ. टीकमणि पटवारी ने भारिया जनजाति के अलंकरणों को परिभाषित किया। वीणा वर्मा ने कोहवर, विवाह भित्ति-चित्रण पर प्रकाश डाला। डॉ. राजेश दत्तात्रेय ने पोला पर्व के अनुष्ठान एवं बैलों की साज- सज्जा के बारे में बताया। विभा ठाकुर ने कोहवर सज्जा की परम्परा का विवेचन किया और सीता से जुड़ी स्मृतियों को उकेरा। ज्ञानेश चौबे ने संचालन किया।

तीसरे दिन अध्यक्षीय उद्बोधन देते डॉ. बहादुरसिंह परमार ने कहा कि लोक में आदिम से सजने संवरने की भावना रही है। प्रकृति के साथ तादात्म्य से प्राकृतिक उपादानों से मानव स्वयं अलंकृत होता रहा एवं पशु- पक्षियों को भी सजाता- संवारता रहा है। डॉ. श्रीकृष्ण काकड़े, डॉ उषा देवी, डॉ. नीतू सिंह, डॉ. निशाली, दिव्या भरद्वाज ने अपने-अपने अंचलों की सज्जा-संस्कृति की जानकारी दी।

डॉ. धर्मेन्द्र पारे ने आभार व्यक्त करते हुए कहा कि आज जबकि बौद्धिक विमर्शों से लगभग वितृष्णा हो रही है, ऐसे चुनौतीपूर्ण समय में सार्थक और सफल संवाद करना सबसे चुनौतीपूर्ण था किन्तु सुयोग्य विद्वानों की वैचारिक परिपक्वता ने संगोष्ठी को आशातीत गरिमा प्रदान की। आशा है, ऐसा ही मनोभाव आप सबका अकादमी के प्रति बना रहेगा।

इस अवसर पर डॉ. पारे का भावभीना अभिनन्दन किया गया।

रेगिस्तान में पाबू पड़गाथा का परचम

-भुवनेश जैन -

क्षेत्र विस्तार की दृष्टि से राजस्थान का रेगिस्तानी इलाका अन्य अंचल-क्षेत्रों से सर्वथा भिन्न है। इधर की भील जाति का जीवन-परिवेश अन्य इलाकों में बसे भीलों की तुलना में अधिक कठोर, अधिक मुश्किल दौर से गुजर-बसर करता दृष्टिगोचर होता है। उनके जीवनमूल्य तथा लोकानुरंजन के तौरतरीके भी अलग अनूठे हैं।

गायन-वादन की दृष्टि से भी वे अपनी अलग निराली पहचान रखते हैं। लोकदेवताओं से सम्बन्धित गायकी के नाम-रूप भी इनके जुदा हैं। इधर के आदिवासी जीवन के गहरे अध्येता भुवनेश जैन भील समुदाय में व्याप्त मूल्यों, चारित्रिक विशेषताओं एवं लोकानन्द के शुद्ध रूपों के संरक्षण के साथ उनके प्रतिदिन के शिल्प-कर्म की विशिष्ट पहचान की आवश्यकता पर ध्यान आकर्षित करते एन्हें प्रोत्साहन देने तथा बाजार की ताकतों के समक्ष अपने उत्पादों को सवाया बनाने का शंखनाद किया है।

सच तो यह है कि रेगिस्तान में निवास कर रहे आदिवासी भील समुदाय अब मुश्किलों के घेरे में हैं परन्तु उन्होंने हमारी श्रेष्ठ परम्पराओं को रेगिस्तानी रंगदारी के साथ परम्परागत जो श्रेष्ठत्व दे रखा है उसकी सुध लेना अत्यन्त जरूरी हो गया है। लोकदेवता पाबूजी के त्याग, शौर्य, वनचबद्धता जैसे मानवीय उच्चादर्शी परिवेश को लेकर जिन घटना का सम्बल लेकर गायकी प्रचलन में है वह अपनी अनोखी शैली तथा गीत-संगीत की प्रस्तुति विशेष में अनोखी है। इसे 'सायल' नाम से जाना जाता है। यह शैली पड़ अथवा फड़ रूप है जिसे बांचने-माण्डने के लिए विशेष रूप से धार्मिक आयोजन किया जाता है।

घुमन्तू रूप में यह शैली अदिवासी कलाकार एक लम्बे फैले चित्रपट का बहुत ही खुबसूरत नजारा लिये गांव-गांव, ढाणी-ढाणी जाकर पाबूजी महाराज की जीवनलीला को रावणहत्था के सहारे गाकर, बांचकर, समझाकर नृत्यमय अदायगी द्वारा जन चेतना मुखरित करने का प्राणवन्त उपक्रम करता है।

रेगिस्तान के 40-50 गांवों में फड़ के कलाकारों ने अपनी इस विरासत को बचाकर रखा है। कनावा लाखेटा के गैर-मेलों की रौनक तथा गरबी, मटकू, बेडली जैसे नृत्य भी इन्हीं आदिवासियों के कारण पहचान लिये हैं। इनके भित्तिचित्र, केशसज्जा, पहनावा तथा खेल अद्भुत रहे हैं। कुंवारी, शादीशुदा, बुजुर्ग विधवा का पहनावा, आभूषण, केशसज्जा अलग होते हैं।

पोमचा, ढेल, हरी मगजी, हुलबान, मानाकारी, बांधण, हलारी, गुलबन्द, मोरिया की चुन्दड़ी, कुर्ता, झब्बा आदिवासी समुदाय को विशिष्टता देती रही है। गाभड़ी, मल्ल, सतोलिया, पिपालिया, वजिया, आंधल घेटो, समसम सोटो, खीर-खीर पाटी, लिक लिकोटी, राति रिंगड़ो जैसे खेल अब देखने को नहीं मिलते हैं। भीलों की अपनी बोली विलुप्त सी हो गई है। रेगिस्तानी आदिवासियों ने लोकसंगीत, लोकनृत्य के साथ बुनकरी के कार्य को लम्बे समय तक जिन्दा रखा। बकरी, ऊंट की जट की पिंजाई कर तंत बनाना, ढेरियों पर कात कर भाखले, बोरे, जिरोही, दरी, पट्टी की बेजोड़ शिल्पकारी के साथ ओड़े बनाने में माहिर रहे हैं। प्रोत्साहन और संरक्षण के अभाव के साथ बाजार की ताकतों ने उनके कला-कौशल को चलन से बाहर रि दिया है।

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

#मॉडल_स्टेट_राजस्थान

बेहतर शिक्षा. नए अवसर.

सेवा ही कर्म, सेवा ही धर्म

- लगभग 1 लाख प्रतिभाशाली बच्चों को टैबलेट दिये जायेंगे।
- 69681 अध्यापकों की नवीन भर्ती लगभग 90 हजार शिक्षक पदों पर भर्तियाँ प्रक्रियाधीन।
- राज्य में 1658 महात्मा गांधी अंग्रेजी माध्यम स्कूलों में गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा।
- 10 हजार अंग्रेजी माध्यम शिक्षकों का नवीन काडर।
- राज्य के सभी सेकेण्डरी स्कूलों को सीनियर सेकेण्डरी स्कूल में क्रमोन्नत करने का निर्णय।
- प्रतिवर्ष 20,000 छात्राओं को स्कूटी वितरण
- बालिका शिक्षा प्रोत्साहन के लिए बालिका प्रोत्साहन योजना, आपकी बेटी योजना एवं गार्गी पुरस्कार के तहत **180.69 करोड़ रुपये** की प्रोत्साहन राशि जारी।
- आरटीई के तहत **1274.78 करोड़ रूपये** की राशि का पुनर्भरण।

- यूनीक आईटी इंस्टीट्यूट - राजीव गांधी फिनटेक डिजिटल इंस्टीट्यूट, जोधपुर में प्रस्तावित, कुल लागत **600 करोड़ रुपये**
- मेडि-टेक, क्लाइमेट टेक एवं एग्रीटेक आदि की उन्नत तकनीकों पर रिसर्च के लिए - राजस्थान इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड लर्निंग, जयपुर।
- जयपुर, जोधपुर एवं कोटा में राजीव गांधी नॉलेज इनोवेशन हब कुल लागत **200 करोड़ रुपये**
- फिनिशिंग स्कूल: राजीव गांधी सेंटर ऑफ एडवांस्ड टेक्नोलॉजी (R-CAT),जयपुर
- गत 4 वर्षों में 211 नवीन महाविद्यालय खोले गए। इनमें से 94 कन्या महाविद्यालय ।
- जिन विद्यालयों में 500 से अधिक छात्राएं वहां कन्या महाविद्यालय खोलने की घोषणा।
- प्रतिवर्ष 200 बच्चों की विदेश में पढ़ाई का खर्च राज्य सरकार द्वारा वहन।
- गत 4 वर्षों में 42 नवीन कृषि महाविद्यालय।

"राज्य में शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए अथक प्रयास किये गये हैं। इसके फलस्वरूप आईआईटी, आईआईएम, आईआईआईटी, एनआईएफटी, एफडीडीआई, एम्स, एनएलयू, आयुर्वेद विश्वविद्यालय , हरिदेव जोशी पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय तथा डॉ. बी.आर. अम्बेडकर विधि विश्वविद्यालय जैसे प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थान आज राजस्थान में संचालित हैं। राज्य में तकनीकी और मेडिकल शिक्षा को प्राथमिकता दी जा रही है। सभी जिलों में मेडिकल कॉलेज खुल रहे हैं। निजी क्षेत्र में विश्वविद्यालय खोले जाने की अनुमति से राज्य में शिक्षा का वातावरण बना है और विश्वविद्यालयों की संख्या 6 से बढ़कर 89 हो गई है। इससे राज्य के विद्यार्थियों को अन्य प्रदेशों में जाने के स्थान पर प्रदेश में ही गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिल रही है। साथ ही मुझे प्रसन्नता है कि राज्य के राजकीय शिक्षण संस्थानों में छात्राओं का नामांकन छात्रों से अधिक हो गया है । बालिका शिक्षा के लिए किए गए कार्यों से आज हमारी बेटियां शिक्षा जगत में नए आयाम स्थापित कर रही हैं एवं उनमें गजब का आत्मविश्वास है।"

अशोक गहलोत, मुख्यमंत्री, राजस्थान

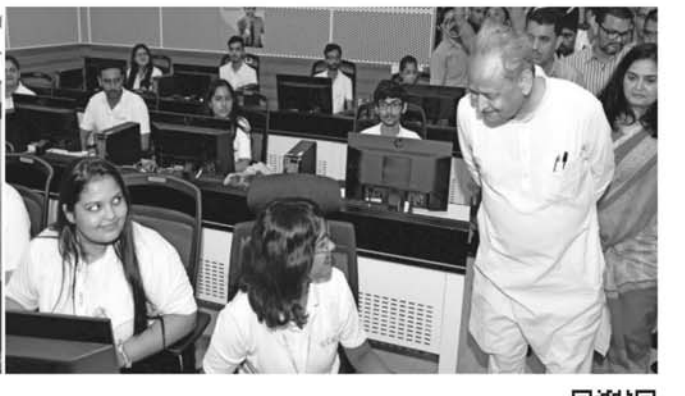

अधिक जानकारी के लिए 181 पर कॉल करें या https://jankalyan.rajasthan.gov.in पर विजिट करें

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान

राजस्थान संवाद

बाजार / समाचार

पेप्सी ने पूरा किया ज़्यादा फिज़ और रिफ्रेशिंग होने का वादा

उदयपुर (ह. सं.)। पेप्सी ने अपनी नई फिल्म लॉन्च की है जो ब्रैंड के दर्शन मोर फिज़, मोर रिफ्रेशिंग को नए सिरे से मज़बूती देता है। नई फिल्म में ब्रैंड एंबेसडर सलमान खान दिखाई देंगे। फिल्म में दोहराया गया है कि पेप्सी आज की स्वैग पीढ़ी की आवाज़ और पसंद है। मूल रूप से यह अभियान युवाओं को पेप्सी आज़माने के लिए प्रेरित करता है जो ग्राहकों को पहले के मुकाबले कहीं अधिक रिफ्रेशिंग अनुभव देता है जिसमें पहले से अधिक फिज़ है।

सौम्या राठौड़, कैटेगरी लीड, पेप्सी कोला, पेप्सिको इंडिया ने कहा कि पेप्सी का नया अभियान ज़्यादा फिज़ के साथ स्वैग और रिफ्रेशमेंट के दर्शन को जीवंत करता है। यह कैंपेन ट्रायल्स को बढ़ावा देते हुए ब्रैंड की बेहतरीन चौलेंजर भावना को दर्शाता है। सलमान के साथ काम करना बहुत ही मज़ेदार अनुभव रहा और हमें पूरा भरोसा है कि पेप्सी को पसंद करने वाले सभी लोग फिल्म में उनके इस नए स्वैग अवतार का आनंद लेंगे।

जगुआर लैंड रोवर के सर्विस कैम्प की घोषणा

उदयपुर (ह. सं.)। जगुआर लैंड रोवर, इंडिया ने ग्राहकों के लिये अपने वार्षिक हॉलीडे सर्विस कैम्प की घोषणा की है। यह कैम्प 19 नवंबर तक सभी अधिकृत रिटेलर्स के यहाँ चलेगा। कैम्प में वाहन की व्यापक जाँच और ब्राण्डेड चीजों, एसेसरीज तथा मूल्यवर्द्धित सेवाओं पर खास ऑफर्स का फायदा उठा सकते हैं। सारे वाहनों को जगुआर और लैंड रोवर के बेहद प्रशिक्षित तकनीशियन देखेंगे और जरूरत पड़ने पर जगुआर और लैंड रोवर के असली पार्ट्स का आश्वासन मिलेगा। इस कैम्प में 32-पॉइंट इलेक्ट्रिक व्हीकल हेल्थ चेक-अप, ब्रेक एण्ड वाइपर चेक, टायर एण्ड फ्लूड लेवल चेक और साथ ही एक विस्तृत बैटरी हेल्थ चेक की पेशकश की जाएगी, जिससे सुनिश्चित होगा कि हर सफर सुरक्षित रहे।

जगुआर लैंड रोवर इंडिया के प्रेसिडेंट एवं प्रबंध निदेशक रोहित सूरी ने कहा कि छुट्टियों के इस सीजन में हम अपने ग्राहकों का जगुआर और लैंड रोवर के अत्यंत प्रशिक्षित तकनीशियनों से अपने वाहन की सेहत की विस्तृत जाँच के लिये स्वागत करते हैं। हॉलीडे सर्विस कैम्प हमारे ग्राहकों की अलग-अलग मौसम में उनकी जरूरतों को पूरा करने के लिये तैयार किया गया एक उपयोगी कार्यक्रम है। शॉफर (ड्राइवर) वाले ग्राहकों के लिये सर्विस कैम्प में विशेष रूप से तैयार शोफर ट्रेनिंग प्रोग्राम भी होगा, जोकि ड्राइविंग और वाहन के रख-रखाव के सभी पहलुओं को शामिल करेगा। इन सेवाओं का फायदा उठाने के लिये ग्राहक 19 नवंबर तक सुबह 9.30 से शाम 4.30 बजे के बीच अपने नजदीकी अधिकृत रिटेलर के साथ अपॉइंटमेन्ट तय कर सकते हैं।

टाटा हिताची के हाइड्रॉलिक एक्सकेवेटरों की प्रदर्शनी

उदयपुर (ह. सं.)। टाटा हिताची जापान की हिताची कंस्ट्रक्शन मशीनरी के सहयोग से भारतीय बाजार में अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी पेश करने में सबसे आगे रही है।

कंपनी ने इंडिया स्टोनमार्ट 2022 में भागीदारी की है और अपने मज़बूत और शक्तिशाली हाइड्रॉलिक एक्सकेवेटर मॉडल जेडएक्स 220 एलसी और जेडएक्स 370एलसीएच प्रदर्शित किए हैं। ग्रेनाइट, मार्बल और स्टोन की खदानों में उपयोग के लिए दोनों मशीनों की बाजार पर मजबूत पकड़ और लोकप्रियता रही है। इस अवसर पर रॉक ब्रेकर जैसे अटैचमेंट भी प्रदर्शित किए गए हैं। प्रदर्शनी में जेडएक्स 370एलसीएच के साथ एक नया बेहतर अल्ट्रा-एचडी अंडरकैरेज और ब्लॉक हैंडलिंग बकेट भी है। यह मशीन कठिन चट्टानी जगहों और असमतल क्षेत्रों में भी बिना रुके काम करने के लिए सबसे सही है। टाटा हिताची के मार्केटिंग और प्रोडक्ट डेवलपमेंट प्रमुख बी.के.आर. प्रसाद, ने कहा कि इंडिया स्टोनमार्ट पूरी दुनिया के स्टोन सेक्टर की सबसे प्रमुख प्रदर्शनियों में से एक है और इससे जुड़े सभी भागीदार इस अवसर पर एकजुट होते हैं। आज टाटा हिताची को दो सबसे विश्वसनीय और शक्तिशाली मशीनें प्रदर्शित करने का गर्व है जो ग्रेनाइट, मार्बल और स्टोन खदान के विभिन्न उपयोगों में बेमिसाल हैं।

ज़िंक जूरी अवार्ड से सम्मानित

उदयपुर (ह. सं.)। वेदांता समूह की एकीकृत सीसा, जस्ता और चांदी की उत्पादक कंपनी हिन्दुस्तान जिंक को टीआईओएल टैक्सेशन अवार्ड 2022 पुरस्कार समारोह में 5000 करोड़ से अधिक कारोबार करने वाली गैर डीम्ड कॉर्पोरेट श्रेणी में जूरी अवार्ड से सम्मानित किया गया है। इस अवार्ड श्रेणी में हिन्दुस्तान जिंक पहले स्थान पर रही वहीं जायडस लाइफ साइंसेस लिमिटेड दूसरे और टाटा पावर तीसरे स्थान पर रही।

जिंक को यह पुरस्कार प्रख्यात जूरी द्वारा प्रदान किया गय जिसमे सुप्रीम कोर्ट के पूर्व न्यायाधीश एके पटनायक, एसके सिंह, पूर्व वित्त सचिव और 15वें वित्त आयोग के उपाध्यक्ष एएन झा, पूर्व उद्योग सचिव रमेश अभिषेक, पूर्व सीबीईसी अध्यक्ष और पूर्व सीबीडीटी चेयरमैन सुश्री प्रवीण महाजन, बिजनेस स्टैण्डर्ड के संपादकीय निदेशक अशोक भट्टाचार्य और डायरेक्ट टैक्स कोड की टास्क फोर्स के सदस्यए एम्बेसडर अजीत कुमार, संयुक्त राष्ट्र कार्यालय में भारत के पूर्व स्थायी प्रतिनिधि प्रख्यात लेखक डॉ. गिरीश आहूजा और अनूप विकल, सीएफओए हेड लीगल और सीएसआर,नायरा एनर्जी लिमिटेड शामिल थे।

मुख्य कार्यकारी अधिकारी अरुण मिश्रा ने कहा कि हमारे संगठन ने सर्वोत्तम कर प्रक्रियाओं को अपनाने के परिणामस्वरूप इस सम्मानित मंच पर मान्यता प्राप्त की है। हम सदैव स्थानीय, सरकार और समुदाय के साथ सकारात्मक संबंधों को विकसित करने और बनाए रखने हेतु प्रयासरत है। जिंक के अंतरिम मुख्य वित्तीय अधिकारी संदीप मोदी ने कहा कि वैश्विक कर वातावरण ने कर पारदर्शिता के एक नए युग में प्रवेश किया है और हिंदुस्तान जिंक में हम कर अनुपालन के संबंध में उच्चतम मानकों को आत्मसात करने का लक्ष्य रखते हैं।

नविटास और बी2बी ब्राण्ड सनडेली में गठबंधन

उदयपुर (ह. सं.)। सोलर पावर बाजार में नवागंतुक बी2बी ब्राण्ड सनडेली ने भारत के शीर्ष सोलर पैनल निर्माता कम्पनी नविटास सोलर के साथ भागीदारी की घोषणा की है। इस सहयोग के तहत, सनडेली राजस्थान में नविटास सोलर के सौर पैनलों का एकमात्र वितरक होगा।

यह गठबंधन राजस्थान में नविटास सोलर मुख्यधारा बनाने पर ध्यान केन्द्रित करेगा। उसी को बढ़ाने के लिए कम्पनी ने सोलर रूबरू सेलिब्रेटिंग 10 इयर्स ऑफ नविटास आयोजित किया। इस कार्यक्रम में सोलर एनर्जी क्षेत्र के हितधारकों को एक मंच पर लाया गया और उन्हें नविटास सोलर के बारे में जानकारी देने और इससे जुड़ने को प्रेरित किया गया। सनडेली के को फाउण्डर इशान चतुर्वेदी ने कहा कि मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने वर्ष 2024-25 तक राज्य के लिए 30,000 मेगावाट सौर ऊर्जा का लक्ष्य निर्धारित किया है। यह गठबंधन उसी के सन्दर्भ में है, जो कम्पनियों को सोलर पीवी प्लांट्स की उचित स्थापना, निष्पादन और रखरखाव में निवेश करने में मदद करता है।

नविटास सोलर के निदेशक अंकित सिंघानिया ने कहा कि इस सहयोग के साथ, हमारा लक्ष्य इस क्षेत्र में विकास और सहयोग में तेजी लाने में मदद करने के लिए समान विचारधारा वाले अक्षय ऊर्जा हितधारकों से जुड़ना है। यह नविटास को राजस्थान में मजबूती से स्थापित करने में मदद करेगा।

इंदिरा आईवीएफ में 'एआई' उपकरण 'लाइफ व्हिस्परर' का उपयोग शामिल

उदयपुर (ह. सं.)। इंदिरा आईवीएफ ने देशभर में मौजूद अपने 100 से अधिक क्लीनिकों में नवीनतम आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) टूल 'लाइफ व्हिस्परर' का उपयोग शुरू करने के लिए प्रेसजेन के साथ समझौता किया है। यह एआई उपकरण इन-विट्रो फर्टिलाइजेशन (आईवीएफ) में बेहतर तरीके से भ्रूण के चयन में सहायता करता है और इस प्रकार गर्भधारण के पूर्वानुमान के बारे में अधिक सटीक जानकारी देता है जिससे कि सफल गर्भाधान के लिए आवश्यक चक्रों की संख्या कम हो सके।

इंदिरा आईवीएफ के प्रबंध निदेशक डॉ. नितिज मुर्डिया ने कहा कि लाइफ व्हिस्परर को शामिल करने से इंदिरा आईवीएफ अपने मरीजों को पारदर्शिता और आश्वासन प्रदान करने में एक कदम आगे बढ़ सकेगा। मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉ. क्षितिज मुर्डिया ने कहा कि हमारा प्रयास हमेशा हमारे रोगियों को अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप सर्वोत्तम संभव उपचार प्रदान करना है। प्रेसजेन की मुख्य कार्यकारी अधिकारी, डॉ. मिशेल पेरुगिनी ने कहा कि प्रजनन क्षमता में एआई के उपयोग को आगे बढ़ाने के लिए इंदिरा आईवीएफ और प्रेसजेन के बीच दीर्घकालिक साझेदारी है।

पिम्स को बेस्ट मेडिकल कॉलेज अवार्ड

उदयपुर (ह. सं.)। एक्सेंट इन ईएनटी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें उदयपुर संभाग, पाली व भीलवाड़ा के मेडिकल कॉलेज में अध्ययनरत यूजी व पीजी के विद्यार्थी सहित 250 ईएनटी सर्जन शामिल हुए। पेसिफिक इन्स्टीट्यूट ऑफ मेडिकल सांइसेज, उमरड़ा के ईएनटी पीजी स्टूडेन्ट डॉ. नबील सिंधी ने पोस्टर प्रस्तुति में प्रथम, शोधपत्र वाचन में डॉ. सुदीप्ति सरल ने प्रथम व पीजी क्विज में डॉ. नबील सिंधी तथा डॉ. सुदीप्ति सरल ने द्वितीय पुरस्कार प्राप्त किया। यूजी

स्टूडेन्ट जितेन्द्र चौधरी ने शोधपत्र वाचन में द्वितीय, एवं यूजी क्विज में हिमांशु तंवर, ऋतिका काला तथा रघुवीर उपाध्याय ने द्वितीय पुरस्कार प्राप्त किया। इस दौरान पिम्स हॉस्पिटल को बेस्ट मेडिकल कॉलेज की ट्राफी प्रदान कर सम्मानित किया गया। पिम्स के चेयरमैन आशीष अग्रवाल ने ईएनटी विभाग व समस्त छात्रों को बधाई दी।

नेपकॉन- 2022 कॉन्फ्रेंस में लंग कैंसर, स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पर मंथन

उदयपुर (ह. सं.)। चेस्ट विशेषज्ञों के 24वें राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस नेपकॉन- 2022 का आयोजन गीतांजली मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल और आर.एन.टी. मेडिकल कॉलेज के संयुक्त तत्वावधान किया गया। इसमें देश-विदेश से आए ख्यातनाम चेस्ट विशेषज्ञ डॉक्टर्स और प्रोफेसर्स द्वारा लंग कैंसर, कोविड 19 महामारी के बाद मानव शरीर और उसके अंगों पर होने वाले दुष्प्रभावों और बीमारियों पर विशेष चर्चा की।

चर्चा में डॉ. एस. के. शर्मा, डॉ. संजीव सिन्हा, डॉ. सैयद हसनैन, डॉ. अस्मिता मेहता, डॉ. पी. अर्जुन, पद्मश्री डॉ. रणदीप गुलेरिया, डॉ. इंद्रानील हैदर, डॉ. यू.सी.ओझा ने कोविड-19 के घरेलू और चिकित्सीय ईलाज, संक्रमण के बाद होने वाली दूसरी रेस्पिरेटरी बीमारियों पर पडने वाले प्रभाव से अवगत कराया। डॉ. महिमा भास्कर, अमेरिका के डॉ. आशुतोष सचदेवा और डॉ. राजीव कौशल ने लंग कैंसर जैसी घातक बीमारी के निदान, नवीनतम जांच तकनीक और इलाज के साथ एडवांस थेरेपीज पर चर्चा की।

डॉ. धर्मेश पटेल, डॉ. राधिका भंकड, डॉ. संदीप कटियार ने फेफड़ों में पानी भरने वाली बीमारी का दूरबीन से जाँच और निदान की नवीनतम तकनीक पर चर्चा की। डॉ. एम. मुनव्वर, डॉ. नासिर यूसुफ, डॉ. संजय मनचंदा, डॉ नितेश गुप्ता, डॉ. प्रणविष, डॉ. अरूप हैदर, डॉ. उज्ज्वल पराग, डॉ. राजीव गोयल, डॉ. राकेश चावला, डॉ निशांत चौहान, डॉ. प्रतिभा गोग्या, डॉ. निष्ठा सिंह, डॉ. क्रांति गर्ग, डॉ. ऋतु सिंघल, डॉ. डी. जे. क्रिस्टोफर, डॉ. अगम वोरा, डॉ. जे. के.सामरिया ने श्वांस और फेफड़ों से जुड़ी टीबी, अस्थमा और सी.ओ.पी.डी. की नवीनतम जाँच और निदान की जानकारी दी। ऑर्गेनाइजिंग चेयरमैन डॉ. एस. के. लुहाड़िया ने टीबी रोग के बाद स्वास्थ्य पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव पर इम्युनोमॉड्यूलेटर्स के रोल पर लेक्चर दिया।

उदयपुर में चतुर्दिवसीय 108 कुंडीय गायत्री महायज्ञ

उदयपुर (ह. सं.)। अखिल विश्व गायत्री परिवार, शांतिकुंज हरिद्वार के तत्वावधान में गायत्री शक्तिपीठ, सर्वऋतु विलास परिवार की ओर से 3 से 6 नवम्बर 2022 तक फतह स्कूल ग्राउण्ड में 108 कुंडीय विराट गायत्री महायज्ञ सम्पन्न हुआ। राजसमंद विधायक श्रीमती दीप्ति किरण माहेश्वरी ने यज्ञ की आवश्यक सार्थकता पर बल दिया।

सर्वऋतु विलास स्थित गायत्री शक्तिपीठ से भव्य सद्गुरु ज्ञान ग्रंथ एवं कलश यात्रा का शुभारंभ दीप्ति किरण माहेश्वरी ने झंडी दिखाकर किया। कलशयात्रा में पीले वस्त्रधारी सैकड़ों महिला-पुरुषों ने भाग लिया। कलशयात्रा से पूर्व गायत्री शक्तिपीठ में विधि विधान से मंत्रोचार के साथ कलश पूजन हुआ। पांच कन्याओं का तिलक लगाकर पूजन करने के साथ उन पर पुष्प वर्षा की गई। मेवाड़-वागड़ और आसपास के क्षेत्रों से बड़ी संख्या में आए साधक और श्रद्धालुओं के साथ सारा नजारा अलौकिक बन गया।

देव कलश वंदना और वेद मंत्रों के उच्चारण के साथ विधिविधान से देवताओं का आह्वान किया गया। डॉ. आलोक व्यास ने शांतिकुंज हरिद्वार से आई साधकों की टोली का तिलक उपरना ओढ़ाकर स्वागत अभिनंदन किया। फतह स्कूल प्रांगण के यज्ञ पंडाल में एक अनूठा संयोग बना। गृह मंत्रालय में उप सचिव एम. कुमार अपने परिवार अचानक जानकारी पाकर यज्ञ में भाग लिया। पंडाल परिसर में लगाई गई गुरुदेव की प्रदर्शनी का शुभारंभ एम. कुमार, हेमंत श्रीमाली, डॉ. आलोक व्यास, के. सी. व्यास, प्रवीण अग्रवाल, ललित पानेरी के हाथों हुआ। दोपहर को कार्यकर्ता गोष्ठी में देव पूजन गायत्री महायज्ञ एवं विभिन्न संस्कारों के बारे में विस्तार वार्ता हुई।

दूसरे दिन महा गायत्री मंत्र, सूर्य देव एवं महामृत्युंजय मंत्र की आहुतियों का क्रम तीन पारियों में चला जिसकी पूर्णाहूति दोपहर एक बजे हुई। सभी देवी-देवताओं एवं ऋषि-महर्षियों का आह्वान किया।

वेद मंत्रों के साथ यज्ञ प्रक्रिया को दीक्षित करने के क्रम में सबसे पहले यज्ञ मंडप के अग्नि कोण, नेरित्य कोण, वायु कोण, ईशान कोण तथा आकाश तत्व का पूजन संपन्न हुआ।चारों और स्थापित तत्व वेदियों का पूजन करवाया गया। पंचतत्व की पूजा विधि संपन्न हुई। सप्तर्षियों तथा 33 कोटि देवी-देवताओं का जाप करते हुए वेद मंत्रों के साथ पूजा-अर्चना करवाई। माता अरुंधति, माता गौरी, माता गायत्री, माता सरस्वती, माता लक्ष्मी, माता दुर्गा एवं माता धरती का भी पूर्ण विधिविधान से पूजन किया गया। ब्रह्मा, विष्णु, रूद्र के साथ ही वायु, इंद्र, कुबेर, अश्विन कुमार, सूर्यदेव के साथ ही नव ग्रहों को यज्ञ मंडप में स्थापित किया गया।

हवन कुंडों पर बनाई गई पवित्र सफेद लाल और काली रेखाओं का पूजन किया गया। हवन में शाकल्य के रूप में चंदन, अशोक, पीपल, खांखरे की लकड़ियों का बुरा, सुपारी, शक्कर, मिश्री पर शुद्ध घी का लेपन कर यज्ञ कुंड में अर्पित किया गया। वेद मंत्रों के साथ आहुतियों का क्रम चला तो स्वाहा की पवित्र ध्वनि से संपूर्ण यज्ञ पंडाल

गूंजायमान हो गया। दोपहर को डॉ. ओमप्रकाश अग्रवाल के सान्निध्य में राज्यस्तरीय कार्यकर्ता गोष्ठी आयोजित हुई जिसमें महायज्ञ एवं विभिन्न क्रियाप्रकल्पों के बारे में चर्चा की गई।

गायत्री महामंत्र अपने अन्दर छिपे देवत्व को जगाता है : डॉ. चिन्मय पण्ड्या

देव संस्कृति विश्व विद्यालय हरिद्वार के प्रति कुलपति डॉ. चिन्मय पंड्या ने कहा कि गायत्री महामंत्र का जाप हमारे अन्दर छिपे देवत्व को जगाता है। यज्ञ वातावरण शुद्धि का कार्य करता है। वेद एवं गायत्री पर सभी का अधिकार है। भारतीय संस्कृति में यज्ञ को पिता एवं गायत्री को माता कहा गया है।

डॉ. पंड्या ने गायत्री महामंत्र एवं यज्ञ के माध्यम से देवत्व की प्राप्ति की पक्रिया समझमाते हुए कहा कि परमात्मा हर जगह विद्यमान हैं लेकिन हम उन्हें देख नहीं सकते। हम केवल उनका अनुभव कर सकते हैं। जिस तरह से पानी में शक्कर घुली हुई है। पानी मीठा है लेकिन जब तक हम

उसे चख कर उसका अनुभव नहीं कर लेंगे तब तक हमें पता नहीं चल पाएगा कि पानी में शक्कर घुली हुई है। जिस तरह से पानी में शक्कर घुली हुई है उसी तरह से देवता और परमात्मा भी मानव मात्र में शक्कर के समान घुले हुए है लेकिन हम उन्हें देख नहीं पाते। गायत्री महामंत्र और महायज्ञ वो ही उपक्रम हैं जिनको करने से हमें यह अनुभव मिलता है कि देवता और परमात्मा हमारे अन्दर विद्यमान हैं। ऐसा अनुभव और आभास हमें गायत्री महामंत्र का जाप करने और महायज्ञ करने के बाद ही मिल पाता है।

महायज्ञ के तीसरे दिन वीडियो संदेश के माध्यम से डॉ. प्रणव पंड्या ने कहा कि अब समय बदल चुका है। गायत्री और यज्ञ घर-घर और जन-जन के लिए सुलभ है। पहले यह पण्डों और पुजारियों तक ही सीमित हुआ करता था। अब तो नारी शक्ति भी यज्ञ करा रही है और भाई भी करा रहे हैं। गायत्री शक्तिपीठ का उद्देश्य ही यही है कि हर व्यक्ति गायत्रीमयी और यज्ञमयी बने। डॉ. पंड्या ने मां गायत्री और यज्ञ का महत्व बताते हुए कहा कि गायत्री यानि सद्ज्ञान और यज्ञ का मतलब सद्कर्म से जुड़ा है। बिना सद्ज्ञान और सद्कर्म के कोई भी ब्राह्मण नहीं बन सकता। जीवन में श्रेष्ठ बनने के लिए केवल भारतीय संस्कृति ही आधार है।

11,000 दीपकों से भव्य दीप यज्ञ :

शैलबाला पंड्या ने श्रद्धालुओं-साधकों के साथ 11,000 दीपक एक साथ जलाकर भव्य दीप यज्ञ संपन्न कराया। दीप यज्ञ का नजारा इतना अद्भुत और अलौकिक था कि उपस्थित हर साधक-श्रद्धालु गायत्रीमयी, यज्ञमयी और दीपमयी हो गया। इसके साथ ही पुंसवन संस्कार भी संपन्न हुआ। इस अवसर पर केंद्रीय कमेटी के डॉ. आलोक व्यास, के. सी. व्यास, वित्त प्रभारी ललित पानेरी, प्रवक्ता हेमंत श्रीमाली आदि उपस्थित थे।

महायज्ञ की हर पारी में 24000 आहुतियां दी गईं। आहुतियों में मुख्य रूप से गायत्री, रुद्र, सूर्य, महाकाल, नारी शक्ति संवर्धन, राष्ट्रीय सुरक्षा, राष्ट्रधर्म, सैन्य शक्ति संवर्धन, महामृत्युंजय के साथ ही सभी के स्वास्थ्य एवं निरोगी रहने के लिए जनकल्याण की आहुतियां दी गईं।

दोपहर को कार्यकर्ता गोष्ठी 'आओ संस्कार गढ़ें' का आयोजन हुआ जिसमें सैंकड़ों बहिनों को विभिन्न संस्कारों से दीक्षित किया। इस दौरान निवृत्तिकुमारी मेवाड़ भी यज्ञ पांडाल पहुंची जिनका दुर्गा जोशी ने तिलक लगाकर, अंजू श्रीमाली ने ऊपरना ओढ़ाकर और आरुषि श्रीमाली ने माल्यार्पण कर स्वागत किया।

चौथे दिन महायज्ञ का तीन पारियों में पूर्णाहुतियों के साथ समापन हुआ। हर पारी में 24000 आहूतियां हुई। आचार्य सुनील शर्मा ने कहा कि भारतीय संस्कृति को यज्ञ संस्कृति कहा गया है। यज्ञ के माध्यम से पर्जन्य, प्राण, ऊर्जा उत्पन्न होता है जिसमें आसपास के समस्त वातावरण में नवीन ऊर्जा, नवीन चेतना का विकास होता है तथा उस क्षेत्र में धन-धान्य की वर्षा होती है।

ललित पानेरी ने बताया कि महायज्ञ का उद्देश्य कोरोना एवं लंपी महामारी से वातावरण की शुद्धि एवं स्वच्छता तथा संपूर्ण भारत के उत्थान का रहा। भोजनशाला प्रभारी के रूप में राजेंद्रकुमार त्रिपाठी, महेश जोशी, बाबूलाल पानेरी, भारत सिंह एवं चंद्रप्रकाश गौड़ ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

एजुकेशन एक्सपो में समझी विदेशी विवि में प्रवेश की प्रक्रिया

उदयपुर (ह. सं.)। सीडलिंग ग्रुप ऑफ़ स्कूल्स तथा ग्लोबल रीच द्वारा छात्रों के उज्ज्वल भविष्य के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण दिशा निर्देशों से परिपूर्ण सम्मेलन आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ थे। विद्यालय के निदेशक हरदीप बख्शी, श्रीमती मोनिता बख्शी तथा ग्लोबल रीच के एचओओ पवन सोलंकी ने उनका स्वागत किया। कार्यक्रम में छात्रों ने भविष्य निर्माण में सहायक तथ्यों को जाना और अपनी समस्याओं पर चर्चा की जिस पर 13 विश्व प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों के प्रतिनिधियों ने उनकी जिज्ञासाओं को शांत किया।

रेडिसन लेकसिटी मॉल में आयोजित हुए इस सम्मेलन में विद्यार्थियों को विश्व के प्रसिद्ध राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों में प्रवेश लेने हेतु विशेष परामर्श प्रदान किया गया जो उदयपुर में पहलीबार सीडलिंग ग्रुप ऑफ स्कूल्स के तत्वावधान में आयोजित हुआ। इससे छात्रों तथा अभिभावकों ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों में प्रवेश लेने की प्रक्रिया की विस्तृत जानकारी प्राप्त की।

कार्यक्रम में उदयपुर के कई जाने-माने विद्यालयों के विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। सीडलिंग ग्रुप ऑफ स्कूल्स के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में छात्रों के साथ उनके अभिभावकों ने भी अपने बच्चों के भविष्य की राह चुनने में आने वाली आशंकाओं पर चर्चा कर उनके समाधान के बारे में जानकारी प्राप्त की। अपने मन में चलने वाले प्रश्नों के समाधान पर परामर्श प्राप्त किया। यहां कक्षा 12वीं तथा स्नातक स्तर के बाद अपने भविष्य निर्माण संबंधी अंतर्राष्ट्रीय पाठ्यक्रमों पर परिचर्चा की गई।

इस उच्च स्तरीय कार्यक्रम को विभिन्न विद्यालयों, छात्रों तथा अभिभावकों द्वारा सराहा गया। इस प्रकार के परामर्श कार्यक्रम से सभी को विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों में प्रवेश लेकर अपने भविष्य को ऊंचे आयाम पर ले जाने में सहायता प्राप्त होगी। साथ ही अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों में प्रवेश प्रक्रिया की जानकारी भी उपलब्ध कराई गई जो निश्चित ही सभी के लिए लाभदायक सिद्ध होगी।

मुख्य अतिथि लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ ने विद्यालय की इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि काश मैं समय को थोड़ा पीछे ले जा सकता और इस तरह के कार्यक्रम से जानकारी प्राप्त कर और अधिक उच्चस्तरीय अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय में प्रवेश के लिए आवेदन कर सकता। उन्होंने सीडलिंग ग्रुप ऑफ स्कूल्स को इस अथक प्रयास के लिए बधाई दी।

सीडलिंग ग्रुप ऑफ स्कूल्स द्वारा संचालित सीडलिंग मॉडर्न पब्लिक स्कूल की प्रधानाचार्य श्रीमती कीर्ति माकन तथा सीडलिंग द वर्ल्ड स्कूल की प्रधानाचार्य श्रीमती राशि रोहतगी ने छात्रों के उज्ज्वल भविष्य निर्माण की कामनाओं के साथ धन्यवाद ज्ञापित किया।

सुब्रतो पॉल ने किया ज़िंक फुटबॉल अकादमी का दौरा

उदयपुर (ह. सं.)। भारतीय फुटबॉल टीम के पूर्व कप्तान एवं अर्जुन अवार्डी सुब्रतो पॉल ने ज़िंक फुटबॉल अकादमी में आयोजित कार्यक्रम में नवोदित फुटबॉलरों को सम्मानित किया और ज़िंक फुटबॉल के नवीनतम लोगो का अनावरण किया। इस दौरान हिन्दुस्तान ज़िंक के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अरूण मिश्रा उपस्थित थे।

ज़िंक फुटबॉल अकादमी के 16 वर्षीय गोलकीपर साहिल पूनिया को सम्मानित किया जो कि भारत की अण्डर 17 टीम के गोलकीपर के रूप में चयनित हुए एवं अकादमी अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत का प्रतिनिधित्व किया। ज़िंक फुटबॉल के सोनू हार्डू को राष्ट्रीय खेलों इंडिया कैंप में उनके सराहनीय प्रदर्शन के लिए सम्मानित किया गया। इस अवसर पर अकादमी के अन्य खिलाड़ी जिन्होंने अपनी बोर्ड परीक्षाओं में असाधारण प्रदर्शन किया, उन्हें भी सम्मानित किया गया।

सुब्रतो पॉल ने कहा कि ज़िंक शिक्षा के साथ-साथ जो सुविधाएं और बुनियादी ढांचा प्रदान कर रहा है, वह वास्तव में उल्लेखनीय है। अरुण मिश्रा ने कहा कि खिलाडियों को उल्लेखनीय उपलब्धियों के लिए सम्मानित करना गौरव का क्षण है। समारोह में ज़िंक की सीएसआर हेड, अनुपम निधि, आबीयू सीईओ जावर माइंस, विनोद कुमार सहित वरिष्ठ प्रतिनिधि उपस्थित थे।

राजस्थानी लोककलाओं का सर्वेक्षण (20)

- डॉ. महेन्द्र भानावत -

कन्हैया :

दांगलिक गीतों में कन्हैया सर्वाधिक लोकप्रिय रहा है। सैंकड़ों की संख्या में लोग कतारबद्ध खड़े होते जाते हैं और अपने हाथों के झाले देते, उछलते, झूमते तथा आगे बढ़ते और पीछे हटते हुए कन्हैयों के दंगल खड़े कर देते हैं। जहां-जहां इनके दंगल जुड़ते हैं वहां पास के गांवों के दल-के-दल उमड़ पड़ते हैं। इनके गीतों के विषय लोकप्रचलित धार्मिक आख्यान होते हैं। इनमें रामायण-महाभारत के राम-कृष्ण विषयक स्थल बड़े महत्त्व के रहे हैं। प्रारम्भ में कृष्णलीलाओं से सम्बन्धित गीताख्यान ही कन्हैया के विषय होते थे। कन्हैया नामकरण भी इसी बात का बोधक है। इन गीतों में दोहा, चौपाई, सवैया छन्द तथा गाड़ी कहाणी रागनियों की प्रधानता रहती है। गूजर, मैना, माली तथा मीणा जाति के लोग इनके प्रसिद्ध गायक रहे हैं। जयपाल मीणा तथा कल्याणप्रसाद वर्मा ने क्रमश: करौली क्षेत्र के मीणा जातीय लोकगीत तथा करौली क्षेत्र के ख्याल साहित्य का विशेष अध्ययन प्रस्तुत किया है। इनके लघुप्रबन्ध मैंने देखे हैं। शोध एव सर्वेक्षण दोनों ही दृष्टियों से ये अच्छे बन पड़े हैं। इनमें से प्रथम प्रबन्ध से कन्हैया के राम तथा कृष्ण विषयक दो उदाहरण यहां दिये जा रहे हैं-

सेतुबंद रामेश्वर महात्मय :

उठान- अरे हर लंका पर चढ़ आये।
डेरा समद तीर लगवाये।।

बढ़ावरा- सांथिर सब मेरी कर लेवो।
रचना रामेश्वर की रच देवो।।

गोढ़ की राग- लागी करना लागी रे करना मेरे कछु
जची न्यारी बात लागी रे करना हां....

कहाणी- अरे हनुमान कर सब काजा।
लछमन राम अवध के राजा।।
तुम तो न्याहीं ते कैलाशन कूं जइयो।
तेरे शिव समा की को संग में लइयो।।

चिट्ठा- खरहे लखन जतन कर
बोले रहबो नहीं गरीबन को।
तीन दिन्या की करूं विनती
होस नहीं वाके तर को।
तुम देखो तो. ॥

चिट्ठा- अरे ऐसी लग रही गांसी
विनती करे अवध के वासी।
मोकू तो समद नाहीं सरजे
लखमन बिजुरिया की नाई मचके।
पहले-पहले रतनागर माथ दिये।
कहे शेष ओतार लखन कह दिये॥

कहाणी- अरे गर्व गुमान छोड़ प्यारे फिर तू ही पछतावेगा।
अगनीबाण उठा कर में तो अब तू कहा जावेगा।

दुबोला- ओ महाराज लिखन मत कोपे।
क अगनी बाण झिले नहीं मोपे।।

कहाणी- तू च्यों गरवाबे रे मन में
तेरे सरम नहीं नैनन में।
कह रहे लखमन भगवंता।
तीन चरु में पी गये जम कहां गई तेरी बलवंता।।

चिट्ठा- छोटे लखन बली को शेष नहीं भावेह।
जैसे आंधी में भबूड़ो बल खावेह॥

कहाणी- दीनबंधु दीनानाथ कृपा कर दीजै।
दोऊ कर जोरूं सरन में लीज।।।

झड़ी- जय-जयकार बोलरयो हर की।
डलिया भर लायो पुष्पन की।
अब तो भेट करे मुतियन की।
लछमन क्रोध हटा अरे क लगरह ओर कटा।।

रागनी- राजा रावन पंडित ज्ञानी
वान सबरेइ लीज बुलाय रे।
महिमा कर रहे शिवजी की।

झड़ी- अरे बकमा कर रहे दोऊ भैया।
बिछू नाग तवैया करे बिछैया।
कैलाशपुरी के रहिया।।

चौपाई- जे रामेश्वर दर्शन कर ही।
तो विन प्रयाग भव तरई।।।

डट्टा- शिव से और नहीं है ऊंचा।
रूप गई सेतु बंध की पूजा।
मेरे ओर कोउ नहीं दूजा।
अरे क दिल में भूलो मती शंकर कैलाशपति।।

डट्टा- माता पारवती अर गंगा।
शिव के तरह-तरह के ढंगा।
बरही जटा लटा में गंगा।
भसमी रम रई तो अरे क
माला फिर रही तो।।

द्रोपदी क्रन्दन :

अरे हतनापुर में, हतनापुर में,
ओ घर-घर चर्चा होरई आज नगर हतनापुर में ।

गीत का उठान- (दुर्योधन का कथन)

अरे राजा जरजोजन समझावे हे समझावै।
पांडू कुल तो कूंतो में क सरम नाहीं आवे।।
है नहीं आवे अर्जन मान हमारी ले रे।
चीर तम हार गये दे बाकू दे रे।।

कहाणी- अरे सभा में करी उघारी।
का परले की बात नगर में कह रहे नरनारी।
सभा में करे उघारी॥

चिट्ठा- अरे भौतई भोत समझायो।।
जबरन वाकूं खैच सभा मे घींसा सर ले आयो।
हो के छे आयो मति खेंचे मेरी अचला।
वेर पड़ेगो चीर लिये ते फट जायगी बगला॥

राग गुजराती- बोले बैन जेठ जनम को घाती।
हतनापुर में नहीं है आज हमारो साथी।
पंडू देख रहे सवेरे पड़ गये द्रोपदी पेड़ झगरे।

रागनी- अर्जुन भीम नकुल सहदेवा रक्षा कौन करे मेरी।
अरे अब रक्षा कौन करे मेरी॥

चिट्ठा- ओ तेने केसी तो गजब कर दइय कर दइय
बेरी जेठ बड़े से कह रही है-

पांचों पांडव धूत क्रीड़ा में हार गये। द्रोपदी करूणा युक्त पुकार करती है लेकिन असमर्थ है। यह देख द्रोपदी बनवारी को करुण भाव से पुकारती है -

कहाणी- हे बनवारी गिरवरधारी
अब कहां गये कृष्ण मुरारी रे
द्रोपदी करुना-करुना कर रई।

डट्टा- राधा रुकमणी जू के बरना।
मेरे दिल में लग रही करना।
बेरा पार लगादे मैरी रे
बेरा पार लगादे मेरी साभलिया।
हांसी करे नगर की
दुनिया कह रही द्रोपती।

दोहा- गगन पति सुत भ्रात है सतिन में एक न होय।
मो पति की पतनी ताकों बांधव अब कहां होय॥

चिट्ठा- अरे क स्वामी दिरोपती कह रहीय।
ओ तेरी कहाँ बनसी बज र लय लाज भरी सभा।
यह रे लाज भरी सभा में जायगी मेरे करता होय
जगत में चरचा करना कर रइये।
कीर्तन की राग-भगतन के सारे
काज हरी भगतन के सारे।
स्वामी ऐसे दीनदयाल
काज हरी भगतन के सारे॥

डट्ठा- अरे स्वामी तेने भगतन के पन पारे
ओ जल डूब रहे त्यारे तिस भर सूंड रई
ता ता थेई ना तिल भर सूंड रई जल ऊपर
तब हरि नाम उचारे
रक्षा खूब करि सायलिया मेरे प्यारे
प्रहलाद भगत कूं त्यारे हरनाकुश कूं मार खंभ फारे जब।

तुर्राकलंगी :

चित्तौड़ घोसुण्डा की तरह इधर भी तुर्राकलंगी के दंगलों की बहुतायत रही है। यहां का चटीकना मोहल्ला तुर्रा तथा फूटा कोट कलंगी के लिए प्रसिद्ध रहा है। ये दंगल लखनऊ, कानपुर के दंगलों से प्रेरित हुए कहे जाते हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व तुर्रा के दंगलियों में रघुनाथगिरि, नंदलालसिंह, मुरलीधर वैश्य तथा कलंगी के नत्थू खां, फत्थू खां, मुल्लन खां के नाम उल्लेखनीय हैं।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात इन दंगलों के मुखिया के रूप में कजोड़ीलाल शर्मा, हरेतराम चरोरा, गिरधरलाल स्वर्णकार, रमेशचंद्र शर्मा (तुर्रा) अब्दुलगनी, जुम्मा खां, मुल्लन खां, नंदलाल स्वर्णकार, शिवसहाय, गफूर तथा कल्याणसिंह (कलंगी) इन दंगलों का आयोजन करते रहे हैं। इधर ये दंगल ढपलियों पर अधिक चलते हैं। तुर्राकलंगी की ही भांति डंडानी तथा सेहरा नामक अखाड़े और होते हैं। डंडानी में चंग-ढपली के बजाय गायक हाथ में लोहे की चूड़ियां पहन कर उन्हें डंडे से बजाता हुआ अपनी गायकी प्रस्तुत करता है। सेहरा में एक व्यक्ति सेहरा धारण करता है। इसी कारण डंडा तथा सेहरा के प्रतीक रूप में ये अखाड़े उक्त नामों से सम्बोधित किये जाने लगे।

हेला ख्याल :

तुर्राकलंगी से भी कहीं अधिक इधर हेला ख्यालों का प्रचलन रहा है। इन ख्यालों के मुख्य प्रेरक शायर रहे हैं। ये जाति के हेला थे अत: इन्हीं के नाम से ये ख्याल हेला ख्यालों के रूप में चल पड़े। वैसे हेला देना इन ख्यालों की एक प्रमुख विशेषता रही है। मण्डली के सभी गायक ख्यालीड़े घेरे के रूप में खड़े हो जाते हैं। उनके बीच में नौपत रखदी जाती है। प्रारम्भ में दो-चार मिनट तक तौर लेने के लिए नौपत बजाई जाती है। तत्पश्चात मुख्य गायक उस्तादों द्वारा देवी की सुमिरनी प्रारम्भ कर दी जाती है।

सुमिरनी के बाद हेला की पीड़ प्रारम्भ हो जाती है जिसमें सांकेतिक रूप में ख्याल का मुख्याशय प्रकट कर दिया जाता है। पीड़ के समाप्त होते ही ख्याल का चढ़ाव प्रारम्भ हो जाता है और उसके ठीक बाद सभी गायक समवेत रूप में लम्बे और ऊँचे स्वरों में 'अजी ए हो' की टेर द्वारा ख्याल का हेला देते हैं। यहीं से हेला अपनी द्रुत गति पकड़ता है। टेर के बाद कली के रूप में विभिन्न राग रागिनियों, लय, तालों एवं तोड़ों में ख्याल का शेष भाग गाया जाता है। कुछ लोगों का यह भी कहना है कि लम्बी टेर का यह हेला ही, जो खेल की जान है, इन ख्यालों के हेला नाम को प्रचारित करने में चरितार्थ हुआ है।

इन ख्यालों में ढपली, चंग, चिमटा, नांद, तुरई का प्रयोग भी किया जाता है। इनके लिए विस्तृत मैदान होता है जहाँ बड़े-बड़े शामियाने तान दिये जाते हैं। ये दंगल रात-रात और दिन-दिन, इस प्रकार कई रात और कई दिन तक लगातार चलते ही रहते हैं। इनमें पारस्परिक प्रतिस्पर्धा एवं होड़ (ईर्ष्या भी) आदि के रूप में काशी के कजली दंगलों की भांति फटहाबाजी तथा बरदस्ताबाजी के उत्कृष्ट रूप देखने को मिलते हैं। इनमें एक ओर प्रथम पक्ष अपने विरोधी पक्ष पर प्रहार करता हुआ उसकी कटावनी करता है तथा दूसरी ओर आशु रचनाओं के रूप में तत्काल ही उस्ताद शायर मंच पर अपनी सरस्वती उड़ेलता हुआ काव्य की मंदाकिनी अवतरित करता हुआ पाया जाता है। हेला का एक उदाहरण -

पीड़- क्या कहूं नृपति एक बात मैं आया हूं कर पाश मैं।
सुन राजन तेरे पास में।
जल्द भेज देयो राम लखन को मेरे पास में।

चढ़ाव- जब मैंने मतो उपायो।
चल्यो मैं अवधिपुरी को आयो तेरे पास में।
सुन राजा रे तेरे पास में सुन भूपति रे तेरे पास में।
अजी ए, अजी ए हो,
जब हम बन में यज्ञ रचावें
हम को आके असुर सतावें
पूजा-पाठ करन नहीं पावें
देखो भूप जंगल तोर। अजी ए।

- क्रमश :

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।